Rv 16

॥ ओ३म् ॥

सत्य शब्द संग्रह

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा ।

प्रकाशक—दिलीप

चतुर्थवार २००० | सं० १९७६ वि० | मूल्य प्रेम

यह पुस्तक श्रीयुत ला० रामजीदास जी अग्रवाल रईस भटिंडा की तरफ से भक्तजनों को बिना मूल्य दी जाती है।

पुस्तक मिलने का पता:—

१ दिलीप वानप्रस्थी,

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा

पो० रेवाड़ी जिला—गुड़गांवा।

२ लाला रामजीदास,

अग्रवाल रईस

भटिन्डा (पंजाब

++ भूमिका ++

प्यारे भजनों में आप की सेवा में एक बड़े उत्तम कल्प वृक्ष के पुष्प समर्पण करता हूँ जिस की गन्ध से तुम्हारा मन रूपी भ्रमर आप से आप उड़ना छोड़कर शान्त होकर आनंद को प्राप्त होगा। वह पुष्प सच्चे आप्त पुरुषों के शब्द हैं जिनका भगवद्भक्तों में बड़ा ही आदर है। और जिन कल्पवृक्ष महात्माओं के इस पुस्तक में शब्द हैं उनके निम्नलिखित यह नाम हैं:—नरसी, नानक, नामदेव, रविदास, कबीर, सूरदास, तुलसी दास, मीराँबाई, चरणदास, मछन्दरनाथ, गोरखनाथ, गुलाब नाथ, भानीनाथ, सुन्दरदास, घीसादासादि। इन भजनों से आप लोगों का अन्तःकरण रूपी दर्पण जब निर्मल होवेगा। तब आपको बड़ा ही आनन्द विदित होगा। इन शब्दों में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और योग भरा हुआ है। जब इन में हम लोग प्रवेश करते हैं तो अपूर्वज्ञान और प्रेमके दर्शन होते हैं। ये शब्द बड़े ही परिश्रम से प्राप्त हुए हैं। इनके गाने वालों को जो प्रेम होता है वही जानते हैं, जैसे गूंगे के गुड़ का स्वाद गूंगा ही जानता है। प्रथम प्रार्थना व उपासना के शब्द हैं तदनन्तर ज्ञान और भक्तिरूप शब्द हैं ये क्रमशः चित्त के मल विक्षेप, आवरण, को दूर करते हैं और सोऽहं ज्योति का प्रकाश करके श्रुति का गगन पर चढ़ा कर सच्चे स्वामी में लय कर देते हैं।

॥ ओ३म् तत् सत् ॥

॥ ओ३म् ॥

सद्गुरुका उपदेश

ओ३म् तत्सत् परब्रह्मणेनमः ।

समुद्र जब स्थिर रहता है तब उसे ब्रह्म कहते हैं और उसी समुद्रमें जब लहर उठतीहै तब उसीको हम शक्ति या माया कहतेहैं वही देश काल निमित्त स्वरूपहै। सविशेष सगुण निर्विशेष निर्गुण उसके दो रूपहैं। पहले रूपमें वह ईश्वर जीव और जगत् है और दूसरे रूपमें वह अज्ञात और अज्ञेय है। सर्व शक्तिमत्ता सर्वव्यापकता अनन्तदया उसी जगज्जननी जगदम्बा प्रेम रूपिणी भगवतीके गुणहैं। प्रत्येक व्यक्ति के पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान है एक कणविन्दू कृष्ण बुद्ध खीष्ट आदि और जगत् का विस्तार एक विन्दु को प्रकाशित करता है एक आत्मा ब्रह्म भिन्न २ सर्व उपाधियों में प्रकाशित होता है। बड़प्पन को डींग दल बन्दी ईर्ष्यादि सदा के लिये छोड़ दो पृथिवी की भाँति संहिष्णु हो। लड़कपनकी चंचलता और युवापन की गम्भीरता दोनों मिलाकर सब के साथ प्रेम से रहो।

आत्मा के स्वरूप का व्यक्त और कभी अव्यक्त भाव होता है। आत्मा मानों बादलों से ढके हुए सूर्यकी न्याई है। हृदयको समुद्र के समान महान् बना डालो, क्षुद्र भावों को पार कर जाओ, अमंगल के आने पर भी आनन्द में उन्मत्त हो जाओ। संसार को एक चित्र की भांति देखो जगत् में कोई तुमको विचलित न कर सकेगा। अहंता को दूर कर दृढ़ता से खड़े हो जाओ काम कांचन मान यश को छोड़ कर ईश्वरको दृढ़ता से पकड़ो। विधि निषेध के घेरे में पड़े रहनेसे आत्मा का प्रसार नहीं होता। जो जितनी ही आत्मानुभूति का प्रकाश कर सकता है उसके उतने ही विधि निषेध कम हो जाते हैं। दूसरों की सेवा शुभ कर्म है इसी के प्रभाव से चित्त शुद्धहोता है इसी के प्रभाव से सब के भीतर बैठे हुए अन्तर्यामी भगवान प्रकाशित होते हैं। आदेश के अनुसार संगठन करने का उद्योग करना, धर्म का यही लक्ष्य है यही उद्देश्य है। आदर्श धार्मिक क्षमा, धृति शौच शान्ति उपासना और ध्यानमें परायण आदर्श का अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है। जहां प्रेम वहीं विस्तार जहां स्वार्थता वहीं संकोच। अतएव प्रेम ही जीवन का एक आधार है अवश्य अहतुक प्रेम करना चाहिये वही एक मात्र जीवन गति का नियम न करने वाला है जिस कर्म से जीवों के मन में धीरे २ ब्रह्मभाव के उदय होने में सहायता पहुंचे वही कर्म उत्तमहै यदि किसी को अधिक सुभीता देना हो तो बलवान की अपेक्षा दुर्बल को

अधिक सुभीता दो सदा दाता बनो अपना सर्वस्व दे डालो पर बदले में कुछ न चाहो। दूसरों से प्रेम करो सहायता करो सेवा करो तुम से जो कुछ बने दूसरों के लिए करो पर सावधान पलटे में कुछ न चाहो। व्यक्तिगत, देशगत, कालगत, कर्माकर्म का साधन करो।

"परोपकाराय सतांहि जीविनम्"

श्री सच्चिदानन्देश्वराय नमः

ओ३म् श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।

आलस्यं मृत्युरित्याहुर्यत्नं जीवन मित्युत।
पिपीलिकाः कणशः कणशोऽश्नंसमाहृत्यरविवरं प्रपूरयन्ति
पुत्तिका वालमीक सञ्चयात् क्षणमपि न विरमन्ति।
सूर्यादयोमहता वेगेन भ्रमन्तः क्षणमपि विश्रान्तिं न कांक्षन्ति
क्षणमपि स्वभिते समीरणो कथमिव व्याकुली भवन्तिजीवाः

हे सच्चिदानन्द अनन्त ज्ञान स्वरूप नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्तस्वभाव, सर्वशक्तिमान सर्व हृदयान्तर्गत सर्व व्यापक प्रभु यदि मैं तुमको यहां मनुष्य शरीर में रहते हुए भी अपने आत्मा में साक्षात् नहीं कर पाता तो और कहां पा सकूंगा अय! मेरे प्यारे परमात्मा मेरे हृदय और नेत्रों में प्रकट होकर साक्षात्

दर्शन दिखाओगे तो इस जीव का कल्याण होगा। ओ३म् परमात्मा यह न वह वरंच सारेपदार्थों मेंहै। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उस का जीवन चरित्र है जो सब के हृदय में विराजमान होकर वह स्वयं लिखरहा है। सारे पदार्थ परमात्माके शब्दहैं और बोलते हैं कि आओ २ मेरी ओर आओ। जो ईश्वर ध्वनि को नहीं सुनता वह बहराहै। जो मनुष्य उत्पन्नहुए पदार्थोंके सौन्दर्य को नहीं देखता वह अन्धाहै सौन्दर्य विवेक धर्म एक ही है तर्क से हम परमात्मा का चिन्तन करते हैं परन्तु सौन्दर्य साक्षात् दर्शन कराता है। वह मनुष्य जो इन सकल पदार्थों को निरीक्षण करके भी धन्यवाद गायन नहीं करता वह गूंगा है। संसारकी सुन्दर वस्तुयें एक विशेष सौन्दर्य की सत्ता की साक्षी हैं प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधु को दर्शाती है जो अन्य पदार्थों के सौन्दर्य और उत्तमता का स्रोत है। उसी को परमात्मा कहते हैं जो वस्तु ईश्वर के समीप है वह उत्तम है और जो दूर है वह निकृष्ट कहाती है। प्रत्येक पवित्रतायें उस पवित्रता के स्रोत को दर्शाती हैं। जो अच्छा है वह अपने से अत्युत्तम श्रेष्ठता की अस्तित्व का प्रमाण है उच्च स्वर से सकल पदार्थ पुकाररहे हैं कि परमात्मा सब में विद्यमान है। जब हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं तो उसके आभ्यन्तर वास करने वाले परमात्मा के कारण से करते हैं। प्यासा मनुष्य जल की अभिलाषा इसलिये करता है कि जल में परमात्मा निवास करते हैं परमात्मा भक्तोंके हृदयमें प्रकट होतेहैं महानसे महान् सुख अच्छे

कामों के चिन्तन से होता है परमात्मा उन से प्यार करते हैं जो बुरे कामों से घृणा कर श्रेष्ठ कार्यानुरत रहते हैं।

साधारण नियम

१. मनुष्य का पहला कर्तव्य यह है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उन की कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे।

२. उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।

३. एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।

४ साधु सज्जन का सत्संग करे।

५. विषयों के आधीन न हो।

६. शत्रुओं को मित्र बनावे।

७. अधिक उपाधि न बढ़ावे।

८. निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

९. भूत मात्र पर दया रक्खे।

१० अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ श्रद्धा रक्खे।

॥ ओ३म् ॥

सत्य शब्द संग्रह ।

दोहा—ओ३म् निरंजन, दुखभंजनं, ररंकार ओङ्कार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥
हो गुरु थारी वेलख माया जो ।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः ।
गुरु रेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
श्री गुरु श्री गोविन्दपद मंगल हित करूं ध्यान ।
मंगल श्री वृजराज घर जो पाऊं सन्मान ॥
काहू के बल भजन को काहू के आचार ।
दास भरोसे राम के सोवत पाँव पसार ॥

शब्द १

ओ३म निरंजन, ररंकार, प्रभु, सोऽहं, सत्य नाम करतार ।
अच्युत, गुरुगोविन्द, दातार परमानन्द, रूप निरधार ॥ टेक ॥

एक अखंड ज्ञान, भंडार तुमरी, ज्योति का उजियार।
मैं, मैं, मैं, पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार।
राम, आत्मा अपरंपार, शङ्कर, ब्रह्म, सर्व का सार।
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ॥ओ०२॥
हरि नारायण अग्नि तार, देव देव मैं करूं हूँ पुकार।
कृष्णानन्ता चल हं गौड़ हुँ, फट् अल्ला सर्व पसार ॥ ओ० ३ ॥
विनवौं तुम को बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तद्वन गणपति नैन मंझार, होवेऽनन्त तुम्हें नमस्कार ॥ ओ०४॥

दोहा—राम नाम के लेत ही होत पाप को नाश।
ज्यो चिनगारी आग की पड़े पुरानी घास।
तुलसी अपने राम को रीझ भजो चाहे खीज।
उलटा सूधा जामिये पड़े खेत में बीज॥

दोहा—पुरुष प्रकृति ईश मिल अकार उकार मकार।
सर्व वेद का मूल है एक शब्द ओंकार॥

शब्द २

हमारे प्रभु एक तुमही ओंकार

मात पिता गुरु बन्धु सहोदर धन विद्या परिवार। टेक
मन बल बुद्धि प्राण तुम ही हो नयनन में उजियार।
हरि होकर हरे रंग में दीसो पत्र पुष्प फल डार॥ह० १ ॥

धरणी अकाश शशि और तारे बिजली में चमकार।
ऊपर नीचे पर्वत सागर सब तुम अपरम्पार ॥ ह० २ ॥

तुम ही सूरज में हो गरजो बरषो अमृत धार।
एक धुनि हो तुम से सब की तुमरा वार न पार ॥ ह० १ ॥

सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता हमको दे दातार।
काम क्रोध मद लोभ निवारो परमानन्द दो प्यार ॥ ह० ॥

दोहा--अच्युत अगम अपार तुम तद्वन ब्रह्म अनन्त।
परम हंस अज ईश शिव सब के आद्योरुअन्त ॥

शब्द ३

मेरा गुरु स्वामियां हो जी।
भजोरे मन शुद्ध सच्चिदानन्द।

सकल ब्रह्मण्ड पुकारें जिन को अनन्त अपार अखण्ड। भजो॥
पुष्प कुमार गगन में तारे वरणत सूरज चन्द ॥ भजो० ॥
सभी वस्तु को सुन्दरताएं जितलाचें गोविन्द ॥ भजो० ॥
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा पूरण परमानन्द ॥ भजो० ॥

दोहा-अवगुण किये तो बहुकिये करत न मानी लाज।
पतित उधारण नाम सुन बिसर गये सब काज ॥

मामेव प्रपद्यन्ते मायां मेतां तरन्तिते, इति भगवद्वचनम् ॥

शब्द ४

हो प्रभु जी थारी अनमिट माया हो रे
हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो।
समदर्शी है नाम तुम्हारो चाहो तो पार करो।
इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परो॥
एक लोहा पूजा में राखे एक घर बधिक परो।
ऊंच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो।
अबकी बेर मोय नाथ उभारो नहीं प्रणजात टरो॥
यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो॥ हमारे०

दोहा–भाव पात्र में अर्पकर सुंदर जीवन फूल।
ईश्वर के अर्पण करो यही ज्ञान का मूल॥

भजन ५

दीनानाथ दयानिधि स्वामी, कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं।
श्रीगङ्गा चरणों से निकसी, शुचो नीर कहां से प्रभु लाऊं।
काम धेनु कल्पवृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदारथ भोग लगाऊं।
चार वेद तुम मुख से भाखे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदङ्ग क्या शंख बजाऊं।
कोटिभानु थारे नखकी शोभा, दीपक ले प्रभु कहादिखाऊं।
लक्ष्मी थारो चरण की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेट चढ़ाऊं।

तुम तिरलोकी के कर्ता हर्ता. तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं।
सुरस्वाद प्रभु त्रिवत विडारण,मनवाँछितफलप्रभुतुमहीसेपाऊं।
दोहा-गुरु को कीजे दण्डवत कोटि कोटि परणाम।
कीट न जाने भृङ्ग को गुरु करले आप समान॥

शब्द ६

मेरे हो मनमाना है गुरु नजर निहाल दयाल। टेक
अधर अकाश अधर वाको बङ्गला घट २ आप समाना है॥
सब से परे दूर नहीं नेड़े अद्भुत रूप लखाना है॥
भवसागर से उतरण कारण गुरु शब्द जतयाना है।
षड् दर्शन में पड़ो जी खट पटो बड़ा सोई जिनजाना है।
घोसा सन्तशरण सतगुरु की जिन डारा मान गुमाना है १
दोहा-मन के हारे हार है मन के जीते जीत।
कहैं कबीर हरि पाइये मन ही के परतीत॥
यह मन साधू से मिलो नहीं तो लेगा ज्यान।
मन मुनसिफ से पूछ ले नीको हो तो मान॥

शब्द ७

मन परदेशी हो ये नहीं अपना देश। टेक
सत् का कहना सत् में रहना आनन्द रूप किसी का भयना।
जो कोइ कहे सभी को सहना येही रटन हमेश॥ मन० १॥
गुरु का वचन सत्य कर मानो जगत् जाल झूठा कर जानो।
तत्व मलि, का रूप पिछानो कटजांय करम कलेश॥ मन० २॥

जो दीखे सो रूप हमारा कोई नहीं है हम से न्यारा।
मित्र और शत्रु कोई न हमारा मिट गये राग और द्वेष ॥ मन० ३
शाह गुरु शुकदेव विराजे चरणदास चरणों में लाजे।
गुरु के वचन कभी नहीं त्यागे यही सत्य उपदेश ॥ मन० ४ ॥

शब्द ८

हे जहां का बसा फेर ना मरे रे—
हंसा चाल बसो वा देश टेक
जहां अगम निगम दोउ धाम वास तेरा परे से परे।
जहां वेदों की गमनाय ज्ञान और ध्यान भी डरे ॥ १ ॥
जहां बिन धरणी की बाट चरणों ते बिना गमन करे।
जहाँ बिन श्रवण सुनले नयनों के बिन दरश करे ॥ २ ॥
तहां बिन देही एक देव प्राणों के बिना श्वांस भरे।
जहां जगमग जगमग होय उजारो दिन रात रहे ॥ ३ ॥
वहां प्रेम नगरिया के घाट अधर दरियाय वगे।
जहां संत करें असनान दूजा तो कोई न्हाय न सके ॥ ४ ॥
जाके न्हाये से सुख होय तपत तेरी तन की मिटे।
तेरे जन्म मरण मिट जांय चौरासी का फंद कटे ॥ ५ ॥
यों कहते नाथ गुलाब अपरापुर थारा वास करे।
गुण गावें भानीनाथ आनंद में सदा लगा ही रहे ॥ ६ ॥

शब्द ९

दोहा-अलख इलाही एक है नाम धराये दोय।
कह कबीर दो नाम सुन भरम पड़ो मत कोय ॥

अलख संग मिलियोरे, तुम चलो दिवाने देश। टेक-
संत सदा उपदेश बतावें घट अंदर दीदार लखावें।
तन मन अर्पण करियोरे॥ १॥
शब्द विहंगम बाजे तूरा कोटि भानु जहाँ भभके नूरा।
बंक नाल सुध करियोरे॥ २॥
पहले पहर सुघर नर जागे चार चौंक अनहद से आगे।
अब चल कबहुँ न चलियोरे॥ ३॥
सुषमन, देश विहंगम शीरो माया गस्त फिरे चहुं फेरी।
भरम भूल मत रहियोरे॥ ४॥
इस पद का कोइ भेद निहारे कहैं कबीर रहदास बिचारे।
नाम को व्यवहारी कोई मिलियोरे॥ ५॥

शब्द १०

दोहा-हम वासो उस देश के जहां जात वर्ण कुल नांह।
शब्द मिलावा हो रहा देह मिलावा नांह॥

है बहुर नहीं आऊंगा जाऊं हजारे देश। टेक
गुण की गठड़ी खोल दिखाऊं पाँच तीन की रचना लाऊं।
लग रहा सीधा तार गगन चढ़ जाऊंगा॥ १॥
अपने गुण पांचों दे दीने अपने अपने उन ले लीने।
हो तुर्या असवार परम सुख पाऊंगा॥ २॥
उलटी पृथ्वी नीर मिलाऊं ओले नीर तेज मे लाऊं।

तेज पवन में मेल पवन नभ लाऊंगा ॥ ३ ॥
टूटगई आस बास कित करिये अपना न कोई कहो कहांरहिये
आठ पहर संग्राम में कैसे लाऊंगा ॥ ४ ॥
छूटगया भोगस्वाद गया जीका जब लगरहा तब लग रहाफीका।
देखत आवे छींक तुरत उठ जाऊंगा ॥ ५ ॥
शब्द विहंगमवास बसाऊं जो कोई सुने उसका जन्ममिटाऊं
अजब रङ्गीला ताक उसी मे लौ लाऊंगा ॥ ६ ॥
संता दीनी मौज अजब घर छाऊं सुख सागर मे डेरा लाऊं।
गुण गांवे भानीनाथ अधर घर छाऊंगा ॥ ७ ॥

शब्द ११

मरदम हो सोई जाने भाइ साधो ऐसा देश हमारा हैरे। टेक
बिन बादल बिजली वहां चमके बिन सूरज उजियारा हैरे।
बिना नयन वहाँ मोती पुरोवें बिना स्वर शब्द उचारा हैरे ॥१॥
भंवर गुफा मे अनहद बाजे मुरली बीन सितारा हैरे।
निरमल बूंद मिली दरिया मे नहीं मीठा नहीं खारा हैरे ॥२॥
जात बरण वहां सूझत नाहीं ना वहां वेद विचारा हैरे।
वहां जाय ब्रह्म बन बैठे कहन सुनन से न्यारा हैरे ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो पहुंचेगा पहुंचन हारा हैरे।
इस पदको जो समझत बूझत अलख लखे सोई प्यारा हैरे ॥४॥

शब्द १२

दोहा-हम वासी उस देश के जहां पार ब्रह्म का खेल।
अगम का दीवा बल रहा बिन बाती बिन तेल॥
साधो हम हैं वासी वा देश के। टेक

हमरे देश में कोई चांद न सूरज रात दिना रहैं एक से॥ १॥
सुरत निरत का जहां ताना पूरा कपड़ा बुने अलेख के॥ २॥
हमारा कपड़ा महंगा बिकत है पहरें संत विवेक के॥ ३॥
हमरे देश का मरम को जाने सदा रहैं सुख एक से॥ ४॥
कहैं कबीर सुनो भाई सन्तो साधू साहिब एक से॥ ५॥

दोहा-गुरु बिन माला फेरते गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है जाय पूछो वेद पुरान॥

शब्द १३

मेरे सारे दुख बिसर गये सतगुरु की मैंने शरण लई। टेक
और सखी सब दूबली तूं विरहिन क्यों लाल।
अविनाशी की सेज पर मौजां हुई है निहाल॥ १॥
अविनाशी की सेज का कह कितना विस्तार।
कहन सुनन की गम नहीं पौढ़त बेपरवाह॥ २॥
सतवन्ती पीहर बसे अन्तर पिव का ध्यान।
कहती तो लाजां रहै ऐसा है आतम ज्ञान॥ ३॥
हंसी नहीं मुसका गई रहे टकटके नैन।

कहैं कबीरा लखगये हे सखी सखी के सैन ॥ ४ ॥

शब्द १४

मेरा राम सनेही जोगी रावलिया मेरीनगरीमें उतराहै आय । टे०

चार कूंट की रम्मत करता धरती धरे न पाँव ।
तीनलोक झोली में राखे राई मे रह्यो समाय ॥ १ ॥
आवो सखी याय देखलें जाका रूप लखा नहीं जाय ।
पीड़ो चाहे परतीत न छोड़ूं मेरे हिरदे में रहो समाय ॥२॥
बरजी काहु की ना रहूं बिन हर देखे रहा न जाय ।
अचरज रूप धरा अविनाशी श्रीनाथ गुलाब लुचाय ॥ ३ ॥

शब्द १५

मेरा मन बानियारे अपनी बान कभी ना छोड़े । टेक ।

हेर फेर के दोनों पलड़े अन्दर कानी डांडी ।
मन में झूठ कपट हिरदे में हाठ चौंपले मांडी ॥ १ ॥
पूरे बाट परे सरकावे कमती बाट टटोले ।
पासंग माहीं डांडो मारे बेगा बेगा बोले ॥ २ ॥
घर तेरे में कुबध्र किरांड़ो छिन २ में चित्त चोरे ।
कुनबा तेरा बड़ा हरामी अमृत में बिष घोले ॥ ३ ॥
जल में तूही थल में तूही घट २ में हर बोले ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो भरम बंधा जग डोले ॥ ४ ॥

शब्द १६

दोहा–मूरख को समझावता ज्ञान गांठ का जाय।
कोयला होय न ऊजला सौ मन साबुन लाय॥

वा घर कभी न जाना जी जाके हिरदे ही में पाप। टेक।
मात पिता का कहा न माने गुरु के नहीं बचन मे।
पर तिरिया से नेह लगावे सुरति नहीं भजन मे ॥ १ ॥
कंचन मैला कभी न होवे दाग रति ना लागे।
गठरी उसकी कौन छोन ले पहरे अपने जागे॥ २ ॥
बाहर उजला अन्तर काला बुगले का सा भेष।
बाहर मेल द्वेष हिरदे में भक्ति लगे ना लेश ॥ ३ ॥
गुरुमुख सोतो पार उतर गये भवसागर जलतरिया।
कहैंकबीर सुनो भाई साधो हरका सुमरण करिया ॥ ४॥

शब्द १७

दोहा–मन के बहुत रंग हैं छिन २ मध्ये होय।
इसके रंग जो ना रहे ऐसा बिरला कोय॥

बीरामन समझियोरे लोभी ये तिरने का घाट। टेक।
कथनी के शूरे घने सब बाँधे हथियार।
उत कोइ बिरला डटे जित बाजे तलवार ॥ १ ॥
शूरा रण में जाय के किस की देखे बाट।
ज्यों २ पग आगे धरे आप कटे चाहे काट ॥ २ ॥

हीरा बीच बजार के सब निरखें साहूकार।
इतने जोहरी नांह मिले सब की अकल खुवार ॥ ३ ॥
सती जो सत पै चढ़ गई कर प्रीतम से प्यार।
तन मन अपना जाल के मांह मिला दई छार ॥ ४ ॥
तन मन सौंपो गुरु अपनेको सत्य शब्द पहचान।
मुश्किल ते आसान होगई जब से सौंप दई जान ॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो लीजो आप संभाल।
चेता जा तो चेत बावरे ना खायगा तोय काल ॥ ६ ॥

शब्द १८

दोहा:-मन के मते न चालिए मन के मते अनेक।
मन पर जो असवार हैं ते साधु कोई एक ॥

जिन्होंने मन मार लिया मैं तो उन सन्तोंका हूँ दास। टेक।
आपा मार जगत में बैठे नहीं किसी से काम।
बन में तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम ॥ १ ॥
मन मारा तन बस किया सभी भरम भये दूर।
बाहर तो कुछ सूझे नाहीं अन्दर झलके नूर ॥ २ ॥
प्याला पीलिया नाम का जी छोड़ा जगत का मोह।
हमको सतगुरु ऐसे मिलगये सहज मुक्त गई होय ॥ ३ ॥
नरसीजी के सतगुरु स्वामी दिया अमीरस प्याय।
एक बूंद सागर में मिल गई कहा करे यमराय ॥ ४ ॥

शब्द १९

दोहा-शब्द ही मारे मर गये शब्द ही तज गये राज।
जिन ये शब्द पिछानिया सरे उन्हीं के काज॥
चोट सहले शेल की लागत लेतउ श्वांस।
चोट सहारे शब्द की तास गुरु मैं दा र॥

घायल ना जीवे जाके लगे शब्द के सेल। टेक।
लागी लागी सभी कहें रे लागी नाहीं एक।
लागी जब ही जानिये रे घाव न आवे मेल॥ १॥
लागी उनको जानिये रे राज तजे अल बेल।
अन्दर दीवा चस रहे रे घला प्रेम का तेल॥ २॥
पढ़ना लिखना है नहीं रे सत संगत का खेल।
चार वेद घट में बसे हैं सांचे गुरु से मेल॥ ३॥
सतसंगसार अनेक हैं रे काटें यम की बेल।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो झूठे जगत के खेल॥४॥

शब्द २०

दोहा-राम नाम मणि दीप धर जीभ देहरी द्वार।
तुलसी बाहर भीतरो जो चाहे उजियार॥
हरि रस ऐसा रे जाके पीये से अमर हो जाय। टेक।
आगे आगे दौजले पीछे हरियल होय।

बलिहारी वा वृक्ष की जड़ काटे फल होय ॥ १ ॥
रामरस महंगा मोल का पीवे विरला कोय।
हरि रस को तो जो जन पीवे घड़पे शीश न होय ॥ २ ॥
भक्ति करो तो कुल नहीं कुल बिन भक्ति न होय।
दो घोड़ों के ऊपर हमने चढ़ा न देखा कोय ॥ ३ ॥
भक्ति करो और कुल रहो अड़े रहो दरवार।
दो घोड़ों की कौन चलावे चारों पै हो असवार ॥ ४ ॥
राम रस पीयो नाम देव पीपा और रहदास।
दास कबीरा ने ऐसा पीया फिर पीवन की आश ॥ ५॥

शब्द २१

दोहा-जो सिर साटे हरि मिले तो पुनि लीजिये दौड़।
नारायण ऐसी न होय गाहक आवे और ॥

बनजारिन नयन उधार (उठ विरहिन सुरत संभार)
टांडा तेरा लद जायगा। टेक।

टांडा तेरा लद चला हे तू बिरहन रही सोय।
जब जागी तब एकली हे नयन गमावे रोय ॥ १ ॥
चन्दन की चौकी बनी हे बीच में जड़ दिये लाल।
हीरा की घुंडी लगी हे पच पच मरे सुनार ॥ २ ॥
लाखों सिर तू दे चुकी हे यमराजा की भेंट।
एक शीश तैंने ना दिया हे श्री नारायण हेत ॥ ३ ॥

सिर माटी का तूंबरा हे सच्ची कर के जान।
सिर के साँठे हरि मिले तो भी सस्ता जान ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो केसवा हे थारी गत अगम अपार।
जिन लादा हरि नाम पर हे सन्त उतारें पार ॥ ५ ॥

शब्द २२

दोहा -काम क्रोध मद लोभकी जब तक घटमें खान।
तुलसी पंडित मूरखा दोनों एक समान ॥

गली तो चहारों बन्द पड़ी म्हारो पिया मिलन कैसे होय। टेक।
काम क्रोध मद लोभ मोह ने घेरी चहारों गैल;
इन गलियन मेरे प्रीतम बसते कैसे करूं मैं वाकी सैल ॥ २ ॥
पाँच पच्चीस पहरवा ठाड़े रोक लिये सब ठाम।
वह विधिना ने कैसी कीनी वैरी बसायो म्हारे गाम ॥ २ ॥
आशा तृष्णा खड़ी दुहेलो इनमें रहा समाय।
कनक कामिनी गहरा फन्दा अन्त तजो नहीं जाय ॥ ३ ॥
ज्ञान भक्ति वैराग योग का मारग दिया बताय।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ना कोई आवे न जाय ॥ ४ ॥

शब्द २३

दोहा–बालक रूपी साइयां खेले सब घट मांह।
जो चाहे सो करत है भय काहूं का नांह ॥

आपही धारमधारीहो स्वामी आपहा खेल खिलारी हो । टेक ।
तम्बू से असमान बनाये ज़मीं ग़लीचा डारी है ।
चांद सूरज दो मिसल बनाये तारागण फुलवारी है ॥ १ ॥
सुरत निरत की चौसर मांड़ो तो पासा जगसारी है ।
जिसकी नरद जीत घरआवे सो नर सुघड़ खिलारी है ॥ २ ॥
सतको चोन्ह विहंगम चोरा जिसकी शून्य अटारी है ।
जापर सतगुरु राजी होवें उसका जगत सिखारी है ॥ ३ ॥
अमरलोकको किया पयानर ज्ञान घोड़े असवारी है ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अब के जीत हमारी है ॥ ४ ॥

शब्द २४

दो० जहां दया तहां धर्म्म है जहाँ लोभ तहां पाप ।
जहां क्रोध तहां काल है जहां क्षमा तहाँ आप ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह ने हो गुरु इनने मेरी मत मारी ।टेक
के ल ब्रह्मरू था मेरा पंच तत्व में लिया बसेरा ।
इन्द्रिय आदि कर्म से लागी बुद्धि है सब से न्यारी ॥ १ ॥
आदि जन्मरा हूं अधिकारी दुःखमें याद आई बुधसारी ।
मनुवा खोज कनौजके देखा बिगड़ रही केशर क्यारी ॥ २ ॥
शून्यसमाधमें जाय समाया चेला गुरुवा कुछ नहीं पाया ।
आपही आप पुकारत आया अब समझा मूरख सारी ॥ ३ ॥
धुनही आसन अमर सिंहासन धुनमें प्राणकरे सुखवासन ।
सुन मछन्दर गोरख बोले जान २ हुआ हितकारी ॥ ४ ॥

शब्द २५

रे मन क्यों भूला मेरा भाई । टेक ।

सुपनेमें राजा राज करत हैं हाकिम हुकुम दुहाई ।
भोर भई जब लाव न लश्कर आंख खुली सुध आई ॥रे०१॥
पक्षी आन वृक्ष पर बैठे रल मिल चौहर लाई ।
भोर भई जब आप २ ने जहां तहां उठ जाई ॥ रे० २ ॥
भाई बन्धु और कुटुम कबीला नाता सगा सनाई ।
आदि अन्त मध्य तुही २ है झूठी मान बड़ाई ॥ रे० ३ ॥
सागर एक लहर बहु उपजै गिनती गिनी न जाई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो उलटी लहर समाई ॥ रे० ४ ॥

शब्द २६

दोहा-धूम धाम में दिन गया सोचत होगई सांझ ।
एक घड़ी हरि ना भजा जन जननी भई बाँझ ॥

भजन बिन बावरे तैंने हीरासा जन्म गवाँया । टेक ।
कभी न आया सन्ते शरणा ना तैं हर गुण गाया ।
यह २ मरा बैल की न्याईं सोय रहा उठ खाया ॥ १
ये संसार हाट बनिये की सब जग सौदा आया ।
चातर माल चौगुणा कीना मूरख मूल ठगाया ॥ २ ।

ये संसार फूल संभल का शोभा देख लुभाया।
मारी चौंच रुई निकस्याई मूड़ी धुन पछताया ॥ ३ ॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू ना आया ॥४॥

शब्द २७

दोहा--सलिल मोह की धार में बहगये गहर गम्भीर;
सूक्ष्म मछली सुरत है चढ़े जो उलटे नीर।

मोह माया की धारा में जग बहगयोरी। टेक।

रावण दुर्योधन से बह गये कोई २ साधु जन रह गयोरी।
मैं मेरे मे जगत् जाय सब सत्गुरु नवका है गयोरी ॥
यह संसार स्वप्न की लीला सत्गुरु मोते कह गयोरी।
जो कोई लाग्यो विषय भोग में सर्वस अपना देगयोरी ॥
जिसने रटा रामको निश दिन वही यहाँसे कुछ लेगयोरी।
कहैं रघुनाथ शरण गुरु की ले ब्रह्मरूप जीव है गयोरी ॥

शब्द २८

दोहा—ज्यों तिल मांही तेल है चकमक मांही आग।
तेरा साईं तोय में जाग सके तो जाग ॥

मन्दर में कांई ढूंढ़ती फिरे कुंजगली में भगवान्
(घट ही में दीनानाथ) टेक

मूरत तो मन्दर में मेली मुख से नाहीं बोले ।
करनी पार उतरनी बन्दे वृथा जन्म क्यों खोले ॥ १ ॥
गऊ मुख से गंगा निकली पांचों कपड़े धोले ।
बिन साबुन तेरा मैल कटेगा हर भज २ हलुवा होले ॥ २ ॥
तनकर कूंडी मनकर साबुन याही में शील समोले ।
सुरत ज्ञानका करे ने मोगरा दिलका दागल धोले ॥ ३ ॥
शील सत्य की नवका चढ़के हर के दर्शन जोले ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो पर्वत राई के ओलहे ॥ ४ ॥

शब्द २६

दोहा—ज्ञानी भूले ज्ञान कथ निकट रहो निज रूप ।
बाहर खोजे बावरो भीतर वस्तु अनूप ॥

बागों ना जारे तेरी काया में गुलज़ार । टेक
करणी क्यारी बोय के रे रहनी कर रखवार ।
दया पौद सूके नहीं क्षमा शीलजल डार ॥ १ ॥
मन माली पर बोध केरे संयम की कर बार !
दुर्मति काग उड़ाय के रे देखे क्यों न बहार ॥ २ ॥
मन गुलाब चित्त केवड़ा रे फूल रही फुलवार ।
मुक्ति कली सदां खिल रही गूंथ पहरले क्यों न हार ॥ ३ ॥
लोभ लहर गहरी नदी रे लख चौरासी धार ।
निगुरे २ बह गये संत उतर गये पार ॥ ४ ॥

अष्ट कमल दल ऊपर रे महिमा अपरम्पार।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवा गमन निवार ॥ ५ ॥

शब्द ३०

सत्यनाम करतारे म्हारे सत्गुरु निश्चय लड़ो सहारे मोरेरामा। टेक
राजाराम बसे घट भीतर बाहिर हाथ न आवे मोरे रामा।
सत्गुरु की तुम सेवा करलो वो तुमें राह बतावें मोरे रामा ॥१॥
नाभि कमलसे रस्ता चालगो सहजां आवे जावे मोरे रामा।
आगे महल त्रिकुटी कहिये वहां गये सुख पावे मोरे रामा ॥२॥
महल त्रिकुटी जगमग झलके देखत ही मुसकावे मोरे रामा।
झीनीरबाज होय अनहद की आगे को उठ धावे मोरेरामा ॥३॥
गुरु प्रताप संत की संगत खोजेंगे सोई पावें मोरे रामा।
शरण मछंदर जती गोरख बोले गुरु अपना दरशावें मोरेरामा॥४॥

शब्द ३१

दोहा—जैसी लकड़ी ढाक की ऐसा यह तन देख।
वामें केशू छुप रहा या में पुरुष अलेख॥
बंगला भला बना दरवेश जामें नारायण परवेश। टेक।
पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों की गारा।
छत्तीसों की छात बना कर चिन गया चिनने हारा॥ बंग० १॥
इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का थंबा।
आवत जावत कोऊ न जाने देखो बड़ो अचंबा॥ बंग० २॥

इस बंगले में चोरमांड़ी खेलें पांच पचीस ।
कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत ॥ बंग० ३ ॥
इस बंगले में पातर नाचे मनुवा तान लगावे ।
सुरत निरत के पहर घूंघरू राग छत्तीसों गावे ॥ बंग० ४ ॥
कहैं मछन्दर सुन बोले गोरख जिन यह बंगला गाया ।
इस बंगले के गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ॥ बंग० ५ ॥

शब्द ३२

साधो मूला बेटा जायो, गुरु परताप साधु की संगत
खोज कुटुम सब खायो । टेक
ममता माई जन्मत खाई पाप पुण्य दोऊ भाई ।
काम क्रोध दो काका खाय खाई तृष्णा दाई ॥ १ ॥
राग द्वेष पारोसी खाये शुभ अशुभ दोउ मामा ।
मोह नगर का राजा खाया तब पहुँचो उस धामा ॥ २ ॥
दुविधा दादी अहं बड़ दादा मुख देखत ही मूआ ।
मंगल चार बधाई बाजी जब यह बालक हुआ ॥ ३ ॥
ज्ञान नाम धरयो बालक का शोभा बरणी न जाई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो घट २ रहा समाई ॥४॥सा०

शब्द ३३

अब एजी साधो अब तो हरी को पायो ।
कलह कलहना मन की मेटी भय और भरम नसायो ॥ टेक

रूप न रेख कछू नाहिं वाके सोऽहं ध्यान लगायो।
अजर अमर अविनाशी देखा सिंधु सरोवर न्हायो ॥ १ ॥

शब्द ही शब्द भयो उजियारो सतगुरु भेद बतायो।
अगन को आपा ही में पायो ॥ २ ॥
जैसे कामिन सुपने सोई आग परयो पलिका पर देखो।
ना कहीं गयो न आयो ॥ ३ ॥

जैसे कामिन कंठ को हीरो आभूषण बिसरायो।
संग की सहेली भेद बतायो जीव को भरम नसायो ॥ ४ ॥
जैसे मिरग नाभि कस्तूरी डोलत बन बन धायो।
नाशा श्वास भई जब आगे पलट निरन्तर आयो ॥ ५ ॥
कहा कहूं वा सुख की महिमा गूंगे ने गुड़ खायो।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ज्यों का त्यों दरशायो ॥ ६ ॥

शब्द ३४

दोहा–अंगन बल आकाश फल अनब्याई का दूध।
ससासिंह के धनुष को खींचे बांझ का पूत॥

लाडो मैंडुकी री तू तो पानी में की रानी। टेक

कउवा तेरा भैया भतीजा चील लगे दौरानी।
बगला तेरा छोटा देवर बाय देख मुसकानी ॥ १ ॥

अंधे ने मणिके को बींधा बिन अंगुली सूई चलानो । +
बिन ग्रीवा के माला पहरी बिन जिह्वा के बाणो ॥ २ ॥
चार चिरैया मंगल गावैं टोंटा ताल बजावे ।
सूतन पहर गधैया नाचे ऊंट बिसन पद गावे ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भई साधो ये पद है निर्वाणी ।
जो इस पदकी निन्दा करे है उसको नर्क निशानो ॥ ४ ॥

शब्द ३५

दोहा—निश्चित होकर हरि भजे मन में राखे सांच ।
इन पांचन को वश करे ताहु न आवे आंच ॥
मारग में लूटें पांच जनी । टेक
पांच पचीसों ने घेरा घाटा साधु जनबह गये उलटो बाटा ।
घेर लिया सब औघट घाटा कलियुग चमके सेलअनी ॥ १ ॥
आशा तृष्णा नदियाँ भारी बह गये संत बड़े डिमधारी ।
जो उभरे सो शरण तिहारी पार लगाइयो आप धनी ॥ २ ॥
बनमें लुट गये मुनि जन नागा डस गई ममता उलटा भागा ।
जाके कान गुरु ना लागा शृंगी ऋषि से ज्ञान घनो ॥ ३ ॥

यथा योगशास्त्रे:-
शङ्कर लुट गये नेज़ाधारी परजा रैयत कौन बिचारी ।
भूल पड़ी कर्मन को मारी निरगुण झुक रहो तीन अनी ॥ ४ ॥
+ अन्धो मणि माविध्यत्तमनङ्गुलिरावयत् ।
अग्रीवस्तं प्रत्य मुंचत्तम जिव्होऽभ्य पूजयत् ॥

रामानन्द दियां गुरु हेला दास कबीर चरख का चेला।
बंका मारग पन्थ दुहेला सुमरो सिरजनहार धनी ॥ ५ ॥

शब्द ३६

दोहा--रत्तो खोज मीनके मारग कहैं कबीर दो भारी।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी॥
मन धन बाजो लाग रहो (लागरहोरे साधो लागरही)टे॰
चौपड़ मांड़ी पीव से रे तन मन धन बाजी लाय।
हारी तो पीव की भई रे जीतूं तो पिया मेरा है॥ १ ॥
चार गली घट एक है रे बरण २ के लोग ।
मनवा वाचा कर्मणा हे प्रीत निभैयो ओड ॥ २ ॥
लख चौरासी भरम के हे पोइ पर अटकी आय।
जो अब के पोह ना पड़े हे बहुर चौरासी जाय ॥ ३ ॥
कहैं कबीर रहदास से हे जीत भई को हार।
अब के तो बाजी जीत जाय रे सोही सुहागन नार ॥ ४ ॥

शब्द ३७

दोहा—कबीर सोय के क्या करे बैठा रहे उठ जाग।
जा संगसे तू बीछड़ा वाही के संग लाग॥
मेरी सुरत सुहागन जाग री। टेक
क्या तूं सोवे मोह नींद में उठके भजन बिच लाग री ॥ १ ॥
अनहद शब्द सुनो चित दे के उठत मधुर धुन राग री ॥ २ ॥

.रण शीशधर विनती करियो पावे अचल सुहाग री ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरता जगत् पीठ दे भाग री ॥ ४ ॥

शब्द ३८

मेरी सुरति गगन मे धाय रहो । टेक

त्रिकुटी महल पर चढ़कर देखा जगमग जोत जगाय रही ॥१॥
अमृत वर्षे बादल गरजे बिजली चमक मन भाय रही ॥२॥
दसवें महल मे सेज पिया की चुन चुन फूल बिछाय रही ॥ ३॥
ब्रह्मानन्द देह सुध बिसरी सहज स्वरूप समाय रही ॥ ४ ॥

शब्द ३९

अनहद धन सिर पर बाज रही । टेक

बाजत शंख मृदंग बांसरी धन गर्जन अति छाय रही ॥ १ ॥
सुन कर मस्त हुआ मन मेरा चंचलता सब भाज गई ॥ २ ॥
तन के कर्म धर्म सब छूटे लोक वेद की लाज गई ॥ ३ ॥
ब्रह्मानन्द गिरा गम नाही सहज समाधि विराज रही ॥ ४ ॥

शब्द ४०

घूंघट खोल दे तेरे पलकों के आगे है राम, भरमने तोड़दे। टेक
पलकों आगे अलख बावरी नूर रहा भरपूर ।
अन्दर बाहर सर्वस भरिया क्या नेड़े क्या दूर ॥ १ ॥

शिर से शक्त उतार चुनरिया परदा भरम उठाय।
जब तुझे दर से नित्य बावरी रोम रोम रहा छाय ॥ २॥
पुस्तक लिखिया न जोय बावरी रेख खिचे ना लोक।
दृष्टिन मुष्टित आवे सजनी पवना ते बारीक ॥ ३ ॥
दरिया लहर भेद ना बौरी जीव ब्रह्म न दोय।
एक ही ब्रह्म सकल घट व्यापो दिलको दुरमत खोय ॥४॥
हाथ में कंगन बांध सुहागन काय को लिया दुहाग।
हाथ में मेहदी नयनन सुरमा सारो श्रीनाथ गुलाब ॥ ५ ॥

शब्द ४१

सुरत मेरी राम पलक मेरी राम से लगी समझ सुहागन।
सुरता नार तीरथ मे माया जाल मे फंसी ॥ टेक
लगनी लहगा पहर सुहागन बीती जाय बहार।
धन जोबन है पाव्हना री आवे न दूजी बार ॥ १ ॥
राम नाम का चुड़ला पहरो निर्गुण सुरमा सार।
नखबेसर हरि नाम कीरी उतर चलोने परले पार ॥ २ ॥
ऐसे बर को कहा बरूं जो जन्मतड़ा मर जाय।
बर पाऊं श्री सावरो जी चुड़ला अमर हो जाय ॥ ३ ॥
मैं जाम्यो हरि मैं ठग्यो जी हरि ठग ले गयो मोय।
लख चौरासी मोरचे जी पल मे हे डारे तोर ॥ ४ ॥
सुरत चली जहां मैं चली निरंकार झनकार।
अविनाशी की पौर पर रे मीरां करे पुकार ॥ ५ ॥ सुरत०

शब्द ४२

दोहा—शब्द बराबर धन नहीं, जो कोई जाने बोल।
हीरा तो दामों मिले, शब्द का मोल न तोल।

शब्द झड़ लाग्यो हे बरसण लाग्यो रंग। टेक
जन्म मरण की चिन्ता भागी समरथ नाम भजन लौ लागी।
म्हारे सतगुरु दीनी सैन सत्य घर पागयोरी ॥ बरसण० १ ॥
चढ़ी सुरत पश्चिम दरवाजा त्रिकुटी महल पुरुष एक राजा,
अनहद की झनकार बजे जहां बाजारी ॥ बरसण० ॥ २ ॥
अपने पिया संग जाकर सोई संशय शोक रहा नहीं कोई।
कट गये करम कलेश भरम भय भागारी ॥ बरसण० ३ ॥
शब्द विहंगम चाल हमारी कहें कबीर सतगुरु दई तारी।
रिम झिम रिम झिम होय काल वश आय गयारी ॥ बरसण ४

शब्द ४३

गगन गरजे वर्षे अमी, बादल गहर गम्भीर।
चहुं दिश दमके दामिनी, भीजे दास कबीर ॥

बादला झुक आया भीजे म्हारी कायारो चीर। टेक
प्रेमघटा ओलर आईरे गगन से तनमन भीजगया हरि रङ्ग से।
बरषे निर्मल नीर इन्दु ज्यों लहराया ॥ बादला० १ ॥
जहां वर्षे जहाँ बिजली चमके घन गरजे और दामिनी दमके।
वर्षे अमृत धार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥ बादला० २ ॥

बस्ती बसो चाहे वन उठ आवो तीरथ जावो चाहे मलरन्हावो
जिनका तनमन होगया फकीर शब्दमें चितलाया ॥ बादला० ३ ॥
नाथ गुलाब दिया गुरु हेला भानी नाथ सुनो निज चेला।
उलट पवन को डाट गगन धारो घर छाया ॥ बादला० ४ ॥

शब्द ४४

दोहा—सुमरण से सुख होत है, सुमरे से दुःख जाय ।
कहैं कबीर सुमरण किये, स्वामी में मिल जाय ॥

भजन में होत आनन्द अनन्त । टेक । सुमरण मे ।

बरसैं शब्द अमी के बादल भीजें महरम सन्त ॥ भजन० १ ॥
कर अस्नान मगन होय बैठे चढ़ा शब्द का रंग ॥ भजन० २ ॥
अगर वास जहां ततकी नदियां बहत धारा गंग ॥ भजन० ३ ॥
तेरा साहिब है तेरे माहीं पारस परसे अङ्ग ॥ भजन० ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो जपले ओ३म सोऽहं ॥भजन० ५॥

शब्द ४५

तेरा जन राम रसायन माता । टेक
प्रेम रसा निधि जाको उपजे छोड़ न कतऊ जाता ॥ १ ॥
सोवत हरि हरि, बैठत हरि हरि, हरि रस भोजन खाता ॥ २ ॥
सुफल जन्म हरिजन का उपजिया कीनों है सात विधाता ॥ ३ ॥
सकल समूह ले उधरे नानक पूरण ब्रह्म पिछाता ॥ ४ ॥

शब्द ४६

हूं वारी मुख फेर पियारे करवट दे मोय काहे को मारे । टेक
करवत भला न करवट तोरी लाग लगे सुन विनती मोरी ॥१॥
तन चीरो तो मुख ना मोड़ूं लगी प्रीत अब कैसे तोड़ूं ॥ २ ॥
हम तुम बीच हुआ नही कोई तुम हो पुरुष नार हम होई ॥३॥
कहत कबीर सुनो नर लाई हम न किसी के हमरा न कोई ॥४॥

शब्द ४७

ऐसो २ हाल लखायो म्हारे सत्यगुरु देख अचंभा आया रहोजी ।
बिना मूल एक बिरछा देखा बिन पत्तर वाकी छाया रहोजी ।
बिना देव एक शक्ति देखी अलख पुरुष थारी माया रहोजी ॥१॥
बिन पानी स्नान बनाये बिन अग्नि तप आया रहोजी ।
धारणा नहींजहां आसनमांडयो बिन धुनिध्यानलगाया रहोजी ॥२॥
भेद अभेद कहा नहीं जावे निर्मल मण्डप छाया रहोजी ।
जितदेखूं तित आपाही दीखे दूजा नज़रनहीं आया रहोजी ॥३॥
पांच पचीसों करें रख वाली त्रिगुण रङ्ग लगाया रहोजी ।
निर्गुण सरगुण दोनों ठाडे बीच में आप समाया रहोजी ।४॥
बहदा वेद मरम कोई जाने काल जीत घर आया रहोजी ।
कहत कबीर सुनोभाई साधो प्रेममगन होके गाया रहोजी ॥५॥

शब्द ४८

दोहा—काया काठी कालघुन, जन्म घुन २ खाय।
काया माहीं काल है, काहू भरम न पाय॥

चरखा चलता नाहीं रे मेरा चरखा हुआ पुराना। टेक
पग खूंटा दोउ हिलने लागे बिच मण्डला ढलकाना।
सभी पखरियां पड़गइ ढीली चलता नहिं मन माना॥१॥
नवा चरखला रङ्ग चङ्गा सब का चित्त चुरावे।
जब चरखे का रङ्ग उतर गया देखा हूं ना भावे॥२॥
रसना तकली ऊबल खागइ कहो कैसे कर छूटे।
शब्द तार सीधा नहीं निकसे घड़ी घड़ी पै टूटे॥३॥
मोटा महीन कातलो कुड़ियां कर अपना सुलझेड़ा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो चेतो क्यों न सवेरा॥४॥

शब्द ४९

मोय लीके लागैं बाजे अनहद तूर। टेक
सोऽहं सोऽहं ध्वनि होत है चहुंदिश रही भर पूर॥१॥
रैन दिवस घन घोर उठत है क्या नेड़े क्या दूर॥२॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो बर्षे नूर ही नूर॥३॥

शब्द ५०

सो जन मस्ताना जिन पायो पद निर्वाणा। टेक
मगन होय चढ़ गयो गगन पर अधर धार धर ध्याना॥१॥

लगन लाय विसराय विश्व को अनहद शब्द पिछाना ॥२॥
खुल गयो कमल नयन जब पायो नित प्रति अमृत पाना ॥३॥
लक्ष कला लिये चन्द्र प्रकाशा कोटि कला लिये भाना ॥४॥
नितानन्द महबूब स्वामी अब निश्चय कर जाना ॥५॥

शब्द ५१

मैं बौरी मेरा राम भर्तार रच रचना को करूं शृङ्गार। टेक
भले निन्दो निन्दो लोग तन मन धन राम प्यारे योग ॥१॥
बाद विवाद काहु से नहीं कीजे रसना राम रसायन पीजे ॥२॥
अब जिये जान ऐसी बन आई मिलूं गुपाल निशान बताई ॥३॥
अस्तुति निन्दा करो नर कोई नामे श्रीरंग भेटल होई ॥४॥

शब्द ५२

एक अनेक व्यापक पूरक जित देखू तित सोई। टेक
माया चित्र विचित्र बिमोहित बिरला बूझत कोई। १
सब गोविन्द है सब गोबिन्द है गोबिन्द बिन नहीं कोई। २
सूत एक मणि सहस्र जैसे ओत प्रोत प्रभु सोई।
जल तरंग और फेन बुद् बुदा जल से भिन्न न होई ॥४
यह प्रपंच पारब्रह्म की लीला बिचरत आन न कोई। ५
मिथ्या भ्रम और स्वप्न मनोरथ सत्य पदारथ जाना ॥ ६॥
सुकृत मनसा गुरु उपदेशी जागत् ही मन माना ॥ ७ ॥

कहत नामदेव हरि की रचना देखो हृदय विचारी ॥ ८ ॥
घट घट अन्तर सर्व निरंतर केवल एक मुरारी ॥ ९ ॥

शब्द ५३

हरि भजमन मेरे पद निर्वाण बहुर न होवे तेरे आवन जान।टेक
सब ते उपजाई भरम भुलाई जिसे तू देवे तिसे बुझाई ॥ १ ॥
सत्गुरु मिले तो संशय जाई किसे पूजे दूसरा नज़र नआई॥२॥
एके पाथर कीजे भाव दूजे पाथर दीजे पाव ॥ ३ ॥
जो वह देवता तो वह भी देवा कहै नाम देव हरि की सेवा ॥४॥

शब्द ५४

मरना तुझे जरूर गुरु कोई धारो रे ॥ धारा ॥
विरले जीव वचन गुरु माना उनको चढ़ा सरूर ॥१॥
शांति सरोवर मंजन कीना छोड़ा सभी ग़रूर ॥२॥
अंतर दृष्टि करी घट भीतर निरखा झिलमिल नूर ॥३॥
पद्म दास फिर सत्य लोक में निरखा कुल्ल हुजूर ॥४॥

शब्द ५५

दोहा—गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीनी दान ॥
हमारे गुरु ने दीनी है ज्ञान जड़ी। टेक
यह तो जड़ी मोय प्यारी लागे अमृत रस की भरी ॥१॥

काया नगर में अधर एक बंगला वा में गुप्त धरी ॥२॥
पाँच नाग पच्चीस नागिनी सूंघत तुरत मरी ॥३॥
इस काली ने सब जग खाया सत्गुरु देख डरी ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो लय परवार तरी ॥५॥

शब्द ५६

दोहा—मैं अपराधी जन्म का, नख शिख भरा विकार।
तू दाता दुख भंजना, मेरी करो संभार ॥
लज्जा मोरी राखो ने स्याम हरी । टेक
कीनी कठिन दुसासन मोय से गह कैशों पकड़ी ॥१॥
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नगन करी ॥२॥
पांचों पण्डा सभी बलहारे इन से कछु ना सरी ॥३॥
भीष्म द्रोणविदुर भये विस्मय इन सब मौन धरी ॥४॥
अब नहीं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुमरी ॥५॥
बसन प्रवाह दिये करुणा निधि सेना हार परी ॥६॥
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यालो की क्या है डरी ॥७॥

शब्द ५७

दोहा--प्रेम २ सभी कहैं, प्रेम न चीन्हे कोय।
जौन प्रेम साहिब मिले, प्रेम कहावे सोय॥
जगत् में झूठी देखी प्रीता टेक
अपने ही सुखसे सब जग लागे क्या दारा क्या मीत ॥१॥

मेरो मेरो सभी करत हैं हित से बांधी चीत ॥२॥
अन्तकाल संगी नहीं कोई यह अचरज की रीत ॥३॥
मन मूरख अजहूँ नहीं समझत सिख दे हारो नीत ॥४॥
नानक भव जल पार परे जो गावे प्रभु के गीत ॥५॥

शब्द ५८

दोहा—संगत से सुख ऊपजे कुसंगत से दुःख होय ।
कहैं कबीर तहां जाइये, साधु संग जहाँ होय॥
सन्त समागम है रे आज हमारे हो रंग । टेक
कथा कीर्तन गावन धावन बहुत सुने परसंग ॥१॥
दिल दरिया में भंवर परत हैं उठ रहे अनन्त तरंग ॥२॥
त्रिकुटी महल में चाल बसो ना बहत धारा गंग ॥३॥
क्या कहूं कुछ कहत न आवे मूरित अचल अभंग ॥४॥
दास गरीब मिटे सब झगड़ा करो साध सत्संग ॥५॥

शब्द ५९

अति ऊंचाताका दरबारा, अन्त नहीं कछु वारा पारा । टेक
कोटिकोटि कोटि लख ध्यावें इक तिल ताका पार न पावैं ॥१॥
लाख भक्त जाकूं आराधैं लाख तपीश्वर तपही साधैं ॥२॥
लाख जोगीश्वर करते जोगा लाख भोगीश्वर भोगत भोगा॥३॥
घट घट सबहि जाने कोइ थोरा है कोइ साजन परदा तोरा ॥४॥
ऊंचा अगम अपार अकत्था नानक करण हार समरत्था ॥५॥

शब्द ६०

हरि की गति नहीं कोउ जाने । टेक
जोगी जती तपी पच हारे और बहु लोग सियाने ॥१॥
छिन में राव रङ्क को करई राव रङ्क कर डारे ॥२॥
रीते भरे भरे ढरकावे यह ताको व्यवहारे ॥३॥
अपनी माया आप पसारी आप ही देखन हारा ॥४॥
नाना रूप धरे बहुरङ्गी सबते रहै नियारा ॥५॥
अनन्त अपार अलख निरंजन जिन सब जग उपजायउ ॥६॥
सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लायउ ॥७॥

शब्द ६१

दोहा— मानुष जन्म दुर्लभ है, होवे न बारम्बार ।
तरुवर से पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार ॥]

सब कुछ जीवत को व्यवहार । टेक
मात पिता भाई सुत बान्धव और पुत्र घर की नार ॥१॥
तनते प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार ॥२॥
आधी घड़ी कोऊ नहीं राखत घरते देत निकार ॥३॥
मृग तृष्णा ज्यों जग रचना है देखो हृदय विचार ॥४॥
सत्गुरु शरण सन्त की सेवा काम क्रोध मद मार ॥५॥
कहै नानक भज राम नाम नित्य जाते होय उद्धार ॥६॥

शब्द ६२

सत्गुरु मिले म्हारे सारे दुख बिसरे अन्तरके पट खुलगयेरी।
ज्ञान की आग जगी घट भीतर कोट कर्म सब जल गयेरी॥
पांच चोर लूटें थे रात दिन आपते आपहीं टल गयेरी।
बिन दीपक म्हारे भया उजाला तिमिर कहां जाने नस गयेरी॥
तिरवेणी से म्हारे धार बहत हैं अष्ट कमल दल खिल गयेरी।
कोटि भानु म्हारे हुआ प्रकाशा और ही रङ्ग बदल गयेरी।
अठसट् तीरथ हैं घट भीतर आपस में रल मिल गयेरी।
शून्य मन्डल में वर्षा होई अमी के कुन्ड उभल गयेरी॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो नूर में नूर जो मिल गयोरी॥

शब्द ६३

मैं कैसे आऊँगी सांवरिया थारी बिकट नगरिया। टेक
नाम निशानी थारा पन्थ दुहेला चढ़त देखमेरा तन मन जरिया।
जबलग नेजु थारी पहुंचत नांही तबलग आवे खाली गगरिया॥२॥
बेगमपुर सोईजन जांगे रूंम २ जिन के प्रेम की पुरिया॥ ३॥
कहैं कबीरसोईजनपहुंचे ब्रह्मअग्नपरजिनकातनमन जरिया॥४॥

शब्द ६४

दोहा— श्वांस २ में राम जप, वृथा श्वांस मत खोय।
ना जानूं इस श्वाँस का, आवन होय न होय॥

तुम राम सुमर लो मंज़िल कठिन पड़ी। टेक।
श्वांस तेरा ये बिरथा जावे मानुष जन्म फेर नहीं पावे।
आंख खोल जरा किधर लखावे शिर पर मौत खड़ी ॥१॥
भाई बन्धु तेरा कुटुम्ब कबीला यमलेचले जबहोगया ढीला।
नारी भी तेरी छैल छबीली रोवेगी खड़ी खड़ी ॥२॥
इन्द्री वेग बड़े बलवानी वेद पढ़े पण्डित मुनि ज्ञानी।
हार चले स्वामी ब्रह्मचारीडुल गये घड़ी रे घड़ी ॥३॥
चक्षु रूप अनोखा चाहैं नाक कहैं हम इतर लगावें।
कान कहैं मानो गन्धर्व गावें पांचों की बन्धी लड़ी ॥४॥
रसना रण हत्या चढ़वावे काम जो वैश्या से पिटवावे।
हरनन्द कहै भाई राम बसावे भूलो न एक घड़ी ॥५॥

शब्द ६५

तूं तो कोई अजब है तेरा अजब तमाशा जग में जोय। टेक।
तुही राम तैंने रावण मारा तू है नन्दकिशोर।
तुही इन्द्र इन्द्रासन तेरा तूं बरसे घन घोर ॥१॥
तुही ब्रह्मा तुही विष्णु महादेव तूं कमलापति गौर।
रूपों में सब रूप धरे हैं तुही करे है किलोल ॥२॥
पाँच तत्व और तीन गुणों में दशों दिशा चहुं ओर।
पिण्ड ब्रह्माण्ड में तुंही बिराजे तू पूरण सब ठौर ॥३॥
तूंही गुप्ता तूंही मुक्ता घट घट ब्रह्म चकोर।
चरण दास रोचक कूं भाषे दूजा नहीं है कोई और ॥४॥

शब्द ६६

दोहा---यह दिन गया अकार्थी, संगत भई न सन्त।
प्रेम बिना पशु जीवना, भक्ति बिना भगवन्त ॥
अच्छे दिन पीछे गये, हरि से किया न हेत।
अब पछताये होत क्या, चिड़िया खाया खेत ॥

हरि के नाम बिना तेरा जन्म अकारथ जाय। टेक।
ओ नर बैठें सभा बिरानी भजन भागवत नाहिं सुना।
वे नर होंगे अब अपराधी माता ने एक पशु जना ॥१॥
कोटि यज्ञ और कोटि गलीचे दान करो सुमेरघना।
बिनाभजन तेरीमुक्ति नहोगी अठसठ तीरथन्हावे नन्हा ॥२॥
ध्रू सुमेर सभी डिग जायेंगे शेषनाग धरणी धरणा।
चांद सूर्य एक छिनमें जायंगे तू नर जीवे कितने दिना ॥३॥
सात समन्दर पार उतरले ना कोई होगा अपना।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह जीवन जैसे सुपना ॥४॥

शब्द ६७

चरखा तोहि अजब मिला तूं तो कात सुहागन नार। टेक
कारीगर ने घड़ा चरखला चौंसठ बन्द लगाय।
पूर्व जन्म से तोहि मिल्यो है काते न मन हर्षाय ॥१॥
शील धर्म व्रत नेम खूटडी सुन्दर ना हिल जाय।
चितजतनी सं बीस पंखड़ी चौकस बंद लगाय ॥२॥

मन माल है न त्याग बावरी मत की नाव बनाय ।
तप तकला और दया दमड़का चरखा चित्त बनाय ॥३॥
राम नाम की तार बांधि ले सुरता मत गरभाय ।
शम्भुनाथ की नाव झोझरी सत्गुरु पार लंघाय ॥४॥

शब्द ६८

दोहा—सहज हो धुन लग रही, कहे कबीर घटमांह ।
हृदय हर २ होत है, मुख की हाजत नांह ॥
हर हर हर हो रही हिये में और वार्ता रे सब झूठी । टेक
प्रेम घटा म्हारे सत्गुरु लाये अमृत बूंदां हद मीठी ।
तिरवेणी के रङ्ग महल में साधां लालाँ हद लूटी ॥ १ ॥
रुण झुण रुण झुण बाजे बाजैं जगमग झलक रही ज्योती ।
ओंकार के सोऽहंकार में हंसला चुग रहा निज मोती ॥ २ ॥
पाँच चोर तेरी काया नगर में इनकी पकड़ो ने शिर चोटी ।
पांचौंकोमार पच्चीसोंको बशकर जब जानूं गा तेरी बुधचोखी ॥३॥
सत् समरण का सेल बना ले ढाल बना ले धीरज की ।
कामक्रोध मनमारके हटाले प्यारे जब जानूंगा तेरी रजपूती ॥४॥
पक्की घड़ी का तोल बना ले कांण न राखो एक रती ।
शरण मच्छंदर जति गोरख बोले अलख लखे कोइ खरा जती ॥५

शब्द ६९

सो म्हारे साधो राम नाम धन खेती । टेक

मन कर हरिया सुरति बरधिया ज्ञान ध्यान दोउ जोती।
ओ३म् नाम को बीज जो बोया उपजी नव निध खेती॥
ध्रु बोई प्रहलाद ने बोई उनकी हुई है अगेती।
काम क्रोध के जो नर बश हैं उनकी पड़त पछेती॥
चोर न चोरे राज न डांडे भेजन लगत टके की।
इस खेती में बहुत नफा है कहियो संतन सेती॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर आन मिलो हित सेतो॥

शब्द ७०

सासरे मैं ना जाऊंगी मोय गुरु मिले रविदास। टेक
एक बेल के दो तूमरी एक ही उनकी जात।
एक तो रुडती डोले गलिन में एक सत्गुरु के हाथ॥१॥
एक मिट्टी के दो हैं बर्तन एक ही उनकी जात।
एक में घलते मक्खन मिश्री एक धोबी के घाट॥२॥
आये गयों की पहनी गाँठे बठैयो सरे बजार।
भूखों को तो भोजन देता आखिर है जात चमार॥३॥
काख में से रापी काढ़ी चीरा अपना गात।
चार युगों के दीखे जनेऊ आठ गांठ नव तार॥४॥
अपने महल से मीराँ उतरी घटो ही में गङ्गा न्हाय।
पांपूजूं इस रहदास के अमर लोक लिये जाय॥५॥

शब्द ७१

सो राणा जी तैं जहर दियो म्हाने जानी । टेक
भर २ के दिये जहर पियाले है गयो अमृत पानी ॥ १ ॥
अबलग सोना कसिये नाहीं होत न बारा बानी ॥२॥
मोय भरोसा श्याम सुन्दर का मेरी घटत न कानी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल लिपटानी ॥ ४ ॥

शब्द ७२

पढ़ो रे भैया कृष्ण गोविन्द मुरार । टेक
कहै प्रहलाद सुनो रे भाई बालक लीजो जन्म सुधार ॥ १ ॥
को है हिरणाकुश अभिमानी जो सके तुमको मार ॥ २ ॥
राक्षन हारो और कोई है श्याम धरे भुज च्यार ॥ ३ ॥
सूरदास प्रभु शरण तिहारी तुम सब के घर बार ॥ ४ ॥

शब्द ७३

दोहा—राम नाम को अंक है, सब साधन हैं शून्य ।
अंक गये कछु हाथ नहीं, अंक रहे दश गुन ॥
बसो जी म्हारे नयनन में सीया राम । टेक
जनक नन्दिनी जगत् वन्दिनी रघुनायक घन श्याम ॥ १ ॥
सरजू के तीर अयोध्या नगरी चित्रकूट निज धाम ॥ २ ॥
कनक मण्डप तले रत्नसिंहासन युगल मूरति अभिराम ॥ ३ ॥
तुलसीदास प्रभुकी छवि निरखत लाजत कोटिशत काम ॥ ४ ॥

शब्द ७४

क्या तन माँजता रे आखिर माटी में मिल जाना। टेक
माटी ओढ़न माटी पहरन माटी का सिरहाना।
माटी का कलबूत बनायो जामे भंवर समाना॥ १॥
मात पिता का कहना मानो हर से ध्यान लगाना।
सत्य बचन तुम निश दिन बोलो सब को सुख पहुंचाना॥२॥
इक दिन दुहले बने बराती शिर पर दुले निशाना
इक दिन जाय जङ्गल में सोवे कर सूधे पग ताना॥ ३॥
पढ़ना लिखना कभी न छोड़ो जो चाहो कल्याणा।
सब के स्वामी पालन कर्त्ता उनका हुकुम बजाना॥ ४॥

शब्द ७५

सखी मधु बन में हे वेन बाजे। टेक
रिम झिम बर्षे ज्योति शिव की देख रूप शत् काम लाजें॥१॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै सब गोपिन बिच कान नाचे॥२॥
कोटिन रवि शशि हुआ प्रकाशा अनहद धुन सुन ज्ञान जागे॥३॥
सोऽहं वंशी ज्योति स्वरूपी जग मगाय लख तिमिर भाजे॥४॥
परमानन्द हुआ मन मेरा एक ब्रह्म ही सर्व राजे॥५॥

शब्द ७६

भवानी तैंने चौदह भुवन बनाये। टेक
भोग विलास आश कर मनकी तीन लोक भरमाये (भटकाये)॥१॥

आदि शक्ति जगदम्बा अम्बा मैं तेरे गुण गाये ॥ २
निराकार तूं ज्योति स्वरूपी च्यारोंहि वेद जनाये ॥ ३ ॥
ऋतं भरा तू शुद्ध मति है कमला गौर कहाये ॥ ४ ॥

शब्द ७७

चलोरे मन निर्गुणियों के देश । टेक
नाम रूप गुण जहाँ न दशें जहां न शारद शेष ॥ १ ॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र नहीं जहां ना माया कृत भेष ॥ २ ॥
पाँच कोष गुण तीन से न्यारा पूरण ब्रह्म अलेख ॥ ३ ॥
परमानन्द हुआ मन मेरा रघुस्वामी को देख ॥ ४ ॥

शब्द ७८

+ अवधो सो योगीगुरु मेरा जो इस पदका करे निवेरा । टे०
तरु वर एक मूल बिन ठाडा बिन फूले फल लागे ।
शाखा पत्र कछु नहीं वाके अष्ट कमल दल गाजे ॥१॥
चढ़ तरुवर दो पक्षी बोले एक गुरु एक चेला ।
चेला रहा जगत् चुन खाया गुरु निरन्तर खेला ॥२॥
शून्य शिखर पर गाय बियानी धरती क्षीर जमाया ।
माखन रहा सो सन्तन खाया छाछ जगत् भरमाया ॥३॥

यथा मुण्डकोपनिषदः—

+ द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयो रन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्यो अभिचाकशीति ॥१॥

पक्षी खोज मीन के मारग कहैं कबीर दो भारी।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी ४॥

शब्द ७९

दोहा—सूरती रूपी घोड़ियां, चली गगन में जायँ।
अमर लोक से प्रेम है, डाटी नांह डटायँ॥
गगन में घोड़ी जाय चली डाटे से डटती नायँ। टेक
कीडी चाली सासरे नौ मन सुरमासार।
हाथी लीया गोद में ऊंट लपेटे जाय॥ १।
बछड़ा गऊ के पेट में हटरी हाट बिकाय।
सुगरा होय जब समझ परत है निगुरे की गम नाय॥ २॥
दशों दिशा में अनहद बाजे घोर रही नभ छाय।
÷रिम झिम रिम झिम ज्योतिझलके आनन्दहिये ना समाय॥३॥
परमानन्द गगन घन घोरे अमृत बरसे आय।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो दिया आवागमन नसाय॥ ४॥

शब्द ८०

सुनो धर्म कर्तव्य मनुष्य का सर्व काल जो सुखदाई।
सुनकर ग्रहण करे श्रद्धा से बने काम उस का भाई॥ १॥

÷भाव—श्रुति ध्यान द्वारा जब हलकी हो जाती है तो कीड़ी की तरह सूक्ष्म होकर मन रूपी हाथी को गोद में लेकर अहङ्कार रूपी ऊंट को लपेटे जाती है।

दुख में दुखी न होय भूल कर सुख में नहीं जो हर्षावे।
हानि लाभ में रहे धीर चित जरा न मन में घबरावे॥
क्षमा शील सन्तोष शान्ति कभी न मन से बिसरावे।
विद्या विनय विवेक बुद्धि में बसे तो सुख सम्पत पावे॥
रहे पवित्र शुद्ध तन मन से तजे कपट और कुटिलाई ॥२॥ सुन०
पर धन और पर नारि निरख कर मन ललचाना ना चाहिये।
अष्ट प्रकार त्याग मैथुन को ईश्वर गुण गाना चाहिये॥
सत्य बात कहने सुनने में कभी न शर्माना चाहिये।
दुष्ट सङ्ग से बचे सदा सत्संत में जाना चाहिये।
करे अतिथि सत्कार वस्त्र भोजन से बड़ों की सेवकाई ॥३॥सुन०
करे धर्म से धन का संचय चाहे जो रोज़गार करे।
तन मन धन और बचन कर्मसे एक का एक सुधार करे॥
कटुक बचन ना कहे किसी से परहित पर उपकार करे।
सत्य विद्या सीखे सिखलावे सदा सत्य व्यवहार करे॥
वेद शास्त्र से ऋषि मुनियों ने सुरपद रीति यह बतलाई ॥४॥ सुन०
मनुष्य मात्र का धर्म वेद में परमेश्वर ने बतलाया।
वही आज संक्षेप रीति से लघु मति मैंने गाया॥
करो करो कर्तव्य मनुष्य का मिले न फिर नर की काया।
अवसर दुर्लभ वृथा जात है बड़े पुण्य से जो पाया॥
खोल नयन सुख चैनहिये के अब तो चेतो चितलाई ॥५॥ सुन०

शब्द ८१

दोहा—धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय॥
माली सींचे केवड़ा, ऋतु आये फल होय॥

रे भूले मन धीरी क्यों न धरे। टेक
अजगर पड़ी धरण में लोटे वो भी पेट भरे।
अलख पंख वो भारी योधा दिन भर भूख मरे॥ १॥
कबहूँ बूंद गगन में दरसे कबहुं तलाव भरे।
कबहूँ पत्थर तिरते देखे लोढ़े डूब मरे॥ २॥
मंजारी सुत आवा में राखे शिर पे अग्न जरे।
खम्भफार हिरणाकुश मारे नृसिंह रूप धरे॥ ३॥
नरसो के प्रभु गिरधर नागर आकर भात भरे॥
दोहा—घर में घर दिखलाय दे, सो गुरु चतुर सुजान।
पांच शब्द धुनकर धुंध, बाजें शब्द निशान॥

शब्द ८२

सत्गुरु आवो हमारे गेह रे। टेक
सब कोई कहे तुम्हारी मोको नारी मोको अति सन्देह रे॥१॥
एक मेक होय सेज न खोवे तब लग कैसा सनेह रे॥२॥
रात दिवस मोय नींद न आवे नयनन बरसे मेह रे॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि चरणन से नेह रे॥४॥

शब्द ८३

साधो अब ना लगेगा थारा दाव रे। टेक
जागत् असुर ये सोवत नाहीं तुम रे मन में बड़ा चावरे ॥१॥
अब के लौट बगद घर जावो फेर लौट तुम आवो रे ॥२॥
रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके मन में समझ समाव रे॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो आवा गमन नसावरे ॥४॥

शब्द ८४

पानी में मीन पियासी मोय सुन सुन आवे हांसी। टेक
जल थल सागर पूर रहा है भटकत फिरे उदासी ॥१॥
आतम ज्ञान बिना नर भटके कोई मथुरा कोई काशी ॥ २ ॥
गङ्गा जाय गोदावरी कानो भक्ति बिना सब नाशी ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो सहज मिले अविनाशी ॥४॥

शब्द ८५

दोहा—ब त गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत।
काल चिरैया चुग रही, निश दिन आयु खेत ॥
सुमरण कर श्री राम नाम, दिन नीके बीते जाते हैं। टेक
तज विषय भोग और सभी काम, तेरेसंग न चलेसी एकदाम।
समझो इसको सुबह शाम, जा देते हैं सो पाते हैं ॥१॥
कौन तुम्हारा कुटुम्ब परिवारा, किसके हो यहाँ कौन तुम्हारा।
किस के बल हार नाम बिसारा, सब जीते जी के नाते हैं ॥२॥

लख चौरासी भरम के आया, बड़े भाग्य मानुष तन पाया।
ता पर भी नहीं करी कमाई, फिर पीछे पछताते हैं ॥ ३ ॥
जो तू लागे विषय विलासा, मूरख फंसे मौज की फांसा।
क्या देखे श्वांसन की आशा, गये फेर नहीं आते हैं ॥ ४ ॥

शब्द ८६

दोहा-- इस अवसर चेता नहीं, पशु ज्यों पाली देह।
राम नाम जाना नहीं, अन्तपड़ी मुख खेह ॥
मत जाइयो रे हंस पियासा, सुख सागर में आय के। टेक
गगन मण्डल में अमी रस भरिया, पीले सांसम सांसा।
ध्रुव ने पीया सुदामा ने पीया, और पीया रहदासा ॥
ध्रू ने पीया प्रहलाद ने पीया, मिट गई यमकी त्रासा।
गोपीचन्द भर्थरी ने पीया, हुआ शब्द परकाशा ॥
शिवरी ने पीया कमालीने पीया, मीरां बाइ पीगई ख़ासा।
कहै कबीर प्रेम रस पीयो, थारी पूरण हो जाय आशा ॥

शब्द ८७

रङ्गमहल के बीच पुरुष मतवाला है। टेक
उलटे प्राण गर्भ में डारे,
अलख पुरुष का खेल भरम से न्यारा है।
गगन मण्डलमें अमी रस भरिया,
नुगरा प्यासा जाय हिये अन्धियारा है।

पांचो आत्मा अपनी सारो नागनका फन बलटा मारो,
मेरु दण्ड को शोध पवन दुधारा।

शब्द ८८

मेरी चुनरी के लाग्यो दाग पिया। टेक
धोवत फिरूं दाग नहीं छूटे मन मुरख अभिमान किया ॥१॥
महंगे मोलकी मेरी आई चुनरिया तन मन धन कुर्बान किया ॥२॥
सत्गुरु धोबियामिले सहजमें दाग ज़िगरका साफ़ किया ॥३॥
(अब) जगमग जगमगकरे चुनरिया कोटिभानु प्रकाश किया॥४॥

शब्द ८९

जुगलिया चाम की जामे बोले रमता राम। टेक
चाम ही ऊंटड़ा चाम का नङ्गारा।
चाम ऊपर चाम बैठा चाम बजावन हारा ॥१॥
चाम हा की गावड़ी चाम ही का बछड़ा।
चाम नीचे चाम ऊंचे चाम दुहावन हारा ॥२॥
चाम ही की धतैली चाम का आकाश।
चाम ही के नोलख तारे जिनमें है परकाशा ॥३॥
कहैं रहदास सुनो भाई साधो कौन चाम से न्यारा।
जो इस चाम से न्यारा कहिये सोही गुरु हमारा ॥४॥

शब्द ९०

सखी मेरे जगे पूर्वले भाग आज गुरु दर्श दिखाय दियोरी। टेक

सब से तोड़ एक संग जोड़ी हमारी अटल धुनि रही लाग।
जब सतगुरु मेरे अंगना में आये हमारे भरम भूत गये भाग॥
घर अंगना परिवार बगर में हमारो अभय नक्कारो रह्यो बाज।
प्रेम पिया संग हिल मिल राची मैंने नेक न मानी लाज॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो मुझे सुख का दिया सुहाग॥

शब्द ९१

तुम को मेरी लाज रघुबर। टेक
सदा सदा मैं शरण तुम्हारी तुम हो गरीब नवाज़ ॥१॥
पतित उधारण बिरद तिहारो श्रवण सुनी हो अवाज़ ॥२॥
हो तो पतित पुरातन कहियो पार उतारो जहाज़ ॥३॥
अघ खंडन दुख भंजन जन के यही तिहारो काज ॥४॥
तुलसीदास पर किरपा करियो भक्ति दान दो आज ॥५॥

शब्द ९२

तुम पलक उघारो दीनानाथ, मैं हाज़िर नाज़िर कब की खड़ा।
साऊ सो तो दुश्मन हो गये लागूं कड़ी बड़ी॥
तुम बिन मेरा कोई नहीं है, तुम बिन नैया मेरी अटक रही ॥१॥
तन मे हूल बदन में लागे सूकूं खड़ा खड़ी।
पलक होगई वर्ष बराबर मुश्किल होरही मैंने घड़ी घड़ी ॥२॥
हार हमेल सभी सुख त्यागे मोतियन तजो लड़ी।
ज्ञान बाण हिरदे में लाग्या प्रेम कटारी हिय रड़क रही ॥३॥

किया करम मेरे सन्मुख होगया धुरकी कलम अड़ी।
बार बार मीरां बाई गावे धनडो साहिब मैंने आजकी घड़ी ॥४॥

शब्द ९३

दोहा—साहेब से सब होत है, बंदे से कुछ नांह।
राई ते पर्वत करें पर्वत राई मांह ॥
साधो राम करे साई होय रे। टेक
परवा पछुवा पवन चलत हैं अछुर रह्यो है सोयरे ॥१॥
तोरो या गढ़ को भीतर आवो बंधो धरी हैं दोयरे ॥२॥
सब जग अपने धन्धे में लागे तम्हें न देखे कोयरे ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो लखे निरन्तर जोयरे ॥४॥

शब्द ९४

हरि भज २ जन्म सुधर जाय कर्म कोट की कटे फाँसी। टेक
तीरथ बरत धरम सब मनके क्या मथुरा भाई क्या काशी।
भटक फिरे खाली रहजावगा अन्त समय यमकी हो फांसी ॥१॥
गम दीपक और तेल ग़रीबी श्रुति की बाती अति खासी।
चांदना हुआ मन्दर में दरस्यो पूरण अविनाशी ॥ २ ॥
पूरण ब्रह्म सकल घट वासी क्या जोगी क्या संन्यासी।
घर और बाहर है दर दर में सांचा साहिब अविनाशी ॥३॥
साध संत मिल सौदा करले भक्ति भाव ना है हांसी।
घीसा संत शरण सत्गुरु की अगम महल के हैं वासी ॥४॥

दोहा--ऊंचा तरवर गगन फल विरला पक्षी खाय।
उस फल को तो जो भखे जीवत ही मर जाय ॥ १ ॥
जब लग आश शरीर की निर्भय भया न जाय।
काया माया मन तजे चौरे रहे बजाय ॥ २ ॥

शब्द ९५

दोहा-कबीरा प्रेम रस जिन पिया, अंतरगत लौ लाय।
रोम रोम में रम रहा और अमल क्या खाय ॥

कोई पीवो रामरस प्यासा रे। टेक
गगन मंडल में अमृत बरषे पीलो सांसम सांसारे।
ऐसा महंगा अमी बिकत है छै रत्ती बारह मासा रे ॥
जो पीवे सो जुग जुग जीवे कबहुं न होत बिनाशा रे।
इस रस कारण हुए नृप जोगी छोड़े भोगविलाशा रे ॥
सहज सिंहासन बैठे रहते भस्म लगाय उदासारे।
गोपीचन्द भर्थरी रसिया और कबीर रहदासा रे ॥
गुरुदादू प्रसाद को चुन के पाया सुन्दर दासारे ॥

शब्द ९६

दोहा--मोमें तोमें सर्व में, जित देखूं तितराम।
राम बिना क्षण एक ही, सरे न एक हु काम ॥

घट घट में पक्षी है बोलता। टेक
आप ही डंडो आप तराजू आप ही बैठा है तोलता ॥१॥

आपही माली आप बगीचा आपही कलियां है तोड़ता ॥२॥
सबमें सब पन आप विराजे, जड़ चेतन में है डोलता ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो मन की घुंडी है खोलता ॥४॥

शब्द ९७

मेरे सैंयां डिगर गये मैं ना लड़ी थी।
इस कायाके दश दरवाजे ना जानूं कौनसी खिड़की खुली थी।
पाँचजिठनियां दशदोरनियां नाजानूं इनमेंसे कौनसी लड़ीथी॥
ना मैं बोली ना मैं चाली ओढ़े दुपट्टा सोई पड़ी थी।
कहैं कमाली कबीरको दईबेटी इस ब्याहसे कारी भली थी॥

शब्द ९८

छाड़ो लंगर मोरी बैयां गहोना। टेक
मैं तो नार पराये घर की मेरे भरोसे गोपाल रहो ना ॥१॥
जो तुम मेरी बैंया गहतहो नयना मिलाय मेरे प्राण हरोना ॥२॥
वृन्दाबन की कुंजगलिनमें रीत छोड़ अनरीत करो ना ॥३॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चित टारो टरेना ॥४॥

शब्द ९९

कछु लेना न देना मगन रहना। टेक
पांच तत्व का बना पींजरा जामें बोले मेरी मैना ॥१॥
तेरो पिया तेरे घट में बसत है सखी खोलकर देखो नैना ॥२॥

गहरो नदिया नाव पुरानी खेवटिया से मिले रहना ।।३।।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो गुरु के चरणमें लिपट रहना ।। ।।

शब्द १००

दोहा—ज्योंही एक ही शिला में, प्रतिमा विविध प्रकार ।
कहैं कबीर त्योंही बसे, ब्रह्म मध्ये संसार ।।
अजि गजि साधो एक रूप सब माही ।
दूजा कर्म धर्म है कृतम ज्यों दर्पण परछांई ॥ टेक
जल तरंग ज्यों जल से उपजे फिर जल माहिं रहाई ।
काया छाया पांच तत्व की विनशे कहा बसाई ॥ १ ॥
वही ब्रह्मा वही विष्णु महादेव सब देवनपति साईं ।
रूपों में सब रूप धरे हैं बिन गुरु दरशे नाहीं ॥ २ ॥
घट में बसे लखे कोइ थारा माया जाल भ्रमाई ।
जब सत गुरु की किरपा होवे भेद भाव मिट जाई ॥ ३ ॥
सब जीवन संग बैर छोड़ मत निन्दा करे पराई ।
कहत कबीर जगत सब मिथ्या ज्यों सपना रहे नाहीं ॥ ४ ॥

शब्द १०१

दोहा—पावक रूपी राम है, घट घट रहा समाय ।
चित चकमक लागे नहीं, धुंआ होजाय ॥
म्हारे प्रेम विरह के बान लगे काहू हरिजन के ॥ टेक०
माया वश हो रहा अज्ञानी जिनके सत्गुरु लगे नहीं कानो ।

चुवक चुवक रह जाय हथोडी जैसे घन के ॥ म्हारे० ॥
धन संपति में फिरत भुलाया गुरु का शब्द नहीं चितलाया ।
अन्त समय पछताय नर्क में जय लटके ॥ २ ॥ म्हारे०
विरही की तो विरही जाने बेदरदी नहीं पीड पिछाने ।
फटा कलेजा ताव बींध गया सब तन के ॥ ३ म्हारे०
जो दीखे सो रूप हमारा अलख लखे सोइ लखने हारा ।
रूप रूप के बीच एक हुआ हरि चमके ॥ ४ ॥ म्हारे०
शुद्ध सच्चिदानन्द अवाया ओंकार अज ध्यान लगाया ।
परमानन्द प्रकाश हुआ गया जम न सके ॥ म्हारे०

शब्द १०२

दोहा—सभी खिलौना खांड मध्य, खांड खिलौने मांह ।
तैसे सब जग ब्रह्म में ब्रह्म जगत के मांह ॥
कर महलों में दर्श महल में प्यारा है । टेक
मूल कमल पद चित्र बखानो कलंक जा लाल रङ्ग मानो ।
देव गणेश तहाँ रूपा ठाणो ऋद्धि सिद्धि चंवर दुलारा हैं ॥
स्वाद चक्र षट् दल विस्तारो ब्रह्मा सावित्री रूप निहारो ।
उलट नागिनी का सिर मारो तहां शब्द ओ३म् कारा है ॥
नाभी अष्टकमल दल राजा श्वेत सिंहासन विष्णु विराजा ।
हिरङ्ग जाप तासु मुख गाजा लक्ष्मी शिव आधारा है ॥
द्वादश कमल हृदय के मांही जनक गुरु शिव ध्यान लगाहीं ।
सोई शब्द तहाँ धुनि छाई गण करें जय जय कारा हैं ॥

दो दल कमल कण्ठ के माहीं तेहि मध्य बसे अविद्या माई।
हरि हर ब्रह्मा चंवर दुलाई जहां शर्ट नाम उचारा है॥
तापर कंज कमल है भाई इक भौंरा दो रूप दिखाई।
निज मन करी जहां ठकुराई सो नयनन पिछुवारा है॥
कमलन भेद किया निरवारा यह रचना सब पिण्ड मंझारा।
सत् सङ्ग कर गुरु शिर धारा वहां संत् नाम उचारा है॥

शब्द १०२

दोहा—घंता फडक के सुन्न में, बाजे अनहद तूर।
तकिया है मैदान में, पहुंचेगा कोई शूर॥

गगन मण्डल में जा जन जाकर सुने बेहद अनहद बानी।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी॥ टेक०
श्याम पुतलियां बदल आंख को रूप रंग देखो सारे।
सप्त ऋषियों ने सात घाट पर भिन्न २ आसन मारे॥
जिस में थाना सहस्त्र कमल को तीन लोक तहां विस्तारे।
अमिता सविता देव सबन के इष्ट रूप सातों धारे॥
घुंघुं चँकुना झाल समधकी घंटा शंख बजें न्यारे।
धूम नीहार गगन में धलिचल ज्योति जरें नो लख तारे॥
पांच कमल के बीच कुण्डलिनी सहज सहज ही फुंकारे।
मेरुदण्ड से सीधा होकर तोड़ दिये नभ के तारे॥
तीन लोक की रचना यहां से भई सुरति यहां दीवानी।
सातों रङ्ग निरखता यहाँ पर होजावे पूरण ज्ञानी॥ १॥

दर्शन यहां तिर लोक पति के पावो मन में हर्षावो ।
सूची अग्र छिद्र में होकर बंक नाल में घुस जावो ॥
तिरछा मारग बंक नाल का बिन सत्गुरु कुछ ना पावो।
ऊंचा नीचा ऊंचा होकर त्रय मण्डल पर चढ़ जावो ॥
प्रत्याहार धारणा धारो सिमट बीच सुखमन आवो ।
पीपी पपीहा ऊपर बोल्यो कूर्म बन कर छुप जावो ॥
और मरे सब जग का मरना तुम जीते जी मर जावो ।
भृङ्गी गुरु का शब्द सुनो तुम चरण गुरू के चित्त लावो ॥
[तन मन सौंपो अपना उनको हो जावो सर्वस्व दानी ।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥ २ ॥
यह ब्रह्माण्ड फोड अण्डे से त्रिकुटी का मण्डल साजा ।
योजन लक्ष लक्ष का घेरा सरे जीव का सब काजा ॥
हास्य विलास यहां पर अद्भुत ओ३म् ओ३म् हद्द बाजा ।
रस का उठे सरूर यहां पर अनहद का बादल गाजा ॥
सहस्र भानु की ज्योति जगे यहां मदन देखकर ही लाजा ।
ज्ञान विज्ञान हुए यहां से जब मोह जाल टूटा तागा ॥
गङ्गा यमुना और सरस्वता इनके भीतर तूं आजा ।
अमृत रस में न्हा कर यहां पर विश्वनाथ दर्शन पाजा ॥
योजन कोटि सुरत फिर जाकर दशों शून्य में मग नानी ।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥ ३ ॥
द्वादश गुण प्रकाश यहां का त्रिकुटी से शून्य में आई ।
रूपवंत देवों से मिल कर सिंधु सरोवर जा न्हाई ॥

महा शून्य की छवि को कोई कहो सके कैसे गाई ।
मान सरोवर अमृत धारा आनन्द की न दयाँ पाई ॥
स्वरंगी सितार बजे हैं बाजे श्रुति शब्द में ठहराई ।
वसु मरुत यहां वास करें हैं कहा कहूं सुन्दरताई ॥
अग्नि चन्द्र समान मुखों से मंद मंद ही मुसकाई ।
आयु षोड़श वर्ष सदन की ऐसी ही अबला पाई ॥
सूर्य कान्त की भूमि बनी यहां अमृत रस बरसे पानी ।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥ ४ ॥
रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके उठे प्रेम की लहरघनी ।
बाग़ बगीचे अमर फलों के लालों की वहाँसड़क बनी ॥
अमी सरोवर बाग़ बाग़ में तट इन का पारस की मणी ।
कैसे शोभा कहैं यहां की सब कुछ जाने आप धनी ॥
स्वयं प्रकाश रूप को लेकर सुरती फिर आगे को चली ।
योजन अरब गई ऊपर को आगे मिल गइ प्रेम गली ॥
दशों दिशा में घोर अन्धेरा मगन भई नहीं छलो बली ।
योजन खरब गई नीचे को यहाँ से देखी सैर भली ॥
इस पद में दस नील अंधेरा यहाँ से सुरति उलटानी ।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी । ५ ॥
योजन खरब गई नीचे को थाह यहां की नहीं पाई ।
धर सत्गुरु का ध्यान सुरतिया उलट गगन पर चढ़ि आई ॥
महा शून्य से आगे आकर सिता असिता नदियां छाई ।
मण्डल चारि पुरुष दर देखा भँवर गुफा झूली जोई ॥

एक हिंडोला, अद्भुत यहाँ पर झूली रहे मुनिवेर राई।
इड़ा पिङ्गला यहां पर अद्भुत सुषमन की पटली लाई॥
कुंडलो का लङ्गर जब खींचा पींग गगन झोका खाई।
परा पश्यंति और मध्यमा सखियों ने वाणी गाई॥
अनहद घोर घटा बिन बरसे बंसी मधुरी मन मानी।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी॥६॥
गोपी मधुरी वाणी गावें बन्सी बजावें नन्द कुमार।
एक एक गोपी सङ्ग मिल कर सोऽहं सोऽहं रहे उचार॥
हियरा से हियरा मिलि भेटे आनन्द को करें सुमार?
और देव की गम नहीं यहां पर महादेव लह मन में धार॥
गोपी बन कर मिले गले से चरणों से गल बैयां डार।
एक हो गये स्वयं रूप में नयनों से नयनों की धार॥
गङ्गा यमुना अचल होगई ऐसा अद्भुत किया विहार।
रुद्र साध्य मुनि एक हो गये ताडी लागी अगम अपार॥
नाका टूटा सत्य लोक का उड़ गये हंसा सैलानी।
सातो रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी॥७॥
ज्योति हंस यहां वास करें हैं सूक्ष्म चैतन्य हो दर्शाया।
जड़ स्थल नहीं है वहाँ पर ना यहां पर काया माया॥
प्रेम दिवानी भई यहां पर सत्य सत्य आपा पाया।
हक हक धुनि सुनि के बीन की फिर आपे में मगनाया।
रूप स्वरूपा नदिया यहां पर सोना रूपा ल छाया।

बन उपवन हैं यहाँ पै अद्भुत कोटि चार उनको छाया ॥
कोटिन सूर्य चांद समाना पहुप वृक्ष पर लगि आयो ।
परमहंस यहाँ वास करें है एक भुशुंड काग पाया ॥
रस बस के आकारे यहाँ पर हंस करें मधुरी बानी ।
सातों रंग निरखना यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥ ८ ॥
सत्य पुरुष का दर्शन कीया क्या बरणों सुन्दरताई ।
कोटिन सूर्य्य चांद देख जो एक रोम से शर्माई ॥
पद्मत्रय लोक बराबर उनको बिछी सेज सुख की पाई ।
जाकर सोई पिया संग अपने सुध बुध अपनी बिसराई ॥
संत कहैं अब अलख लोक की महिमा और उत्तम ताई ।
अरबन खरबन ज्योति चमकें कोट शंख जो मलुकाई ॥
अगम लोक की गम नहीं मुझ को गूंगे ने मिसुरी खाई ।
परमानंद गुरु चरणों पर कोट कोट ही बल जाई ॥
गुरू मिला आपा अब मेटा श्रुति शब्द मगनानी ।
सातों रंग निरखना यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥ ६ ॥

दोहा—लगन लगन सभी कहैं, लगन कहावे सोय ।
नारायण जा लगन में, तन मन दीजे खोय ॥

शब्द १०४

लगन बिन जागे ना निर्मोही ॥ टेक ॥
बिना लगन की प्रीति बावरे ओस नीर ज्यों धोई ॥ १ ॥
हमतो रहते राम भरोसे रजा करे सोई होई ॥ २ ॥

बिन कृपा सत गुरु नहीं पावे लाख जतन करो कोई ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो गुरु बिन मुक्ति न होई ॥ ४ ॥
दोहा--माला जपूं न कर जपूं, मुख से कहुं न राम ।
मन मेरा सुमरण करे, कर पाया बिसराम ॥

शब्द १०५

हर दम तसबी ने फेर भाई तेरे अन्दर अमोला लाल ॥टेक॥
बिन तागे यह तसबी पोई बिना सार का बीज।
अंदर सुमरणा एक न फेरी रहा काठ पे रीझ । १ ॥
मरजा जिकर मिटे सब तेरा मर के तेरा जीव ।
लाख दुहाई तैंने तेरे सतगुरु की तेरे में तेरा पीव ॥ ३ ॥
एक हजार छैंसो बीसरे चांद सूरज के बीच ।
नौ दरवाजे बंध कर राखे दश मे बसे जगदीश ॥ ४ ॥
पहले आपा खोजिये फिर मुंडाइये मूंड़ ॥
इधर उधर को क्या ढूंढे है इसो ढूंढ़ में ढूंढ़ ॥ ५ ॥
ऐजी साध बंदगी बाकी जिन गुरू दियो उपदेश ।
कलतर स्याह ने सैन लखाई दिल अन्दर दरवेश ॥ ६ ॥

शब्द १०६

अगम नहीं गुरू बिन सूझ पड़े ॥ टेक ॥
चार वेद पढ़े पुराण अठारा नांपट खोज मरे ॥ १ ॥
ज्ञानी बिना भरम नहीं छूटा झूठा ही वाद करे ॥ २ ॥
कह गुरु शब्द आकाश बांस पर अति गगन चढ़े ॥ ३॥

तन विराट जीवित रे तुलसी सहज ही भव उतरे ॥ ४ ॥

दोहा--लोहा जैसे काठ संग, चलत फिरत जल माहिं।
बड़े न डूबन देत हैं, जाकी पकरे बाहिं ॥

शब्द १०७

संगत तो करले साध की जासे उपजेंगे आत्म ज्ञान।
जल देखे शुचि उपजे साधु देखे ज्ञान ॥
माया देखे लोभ ऊपजे तिरया देखे काम ॥ १ ॥
साधु मिलन जब चालिये तज माया अभिमान।
ज्यों २ पग आगे धरे त्यों २ यज्ञ समान ॥ २ ॥
साधु हमारी आत्मा हम संतन की देह।
रोम रोम में ऐसा रम रहा ज्यों बादल में मेह ॥ ३ ॥
साधु माई बाप हैं साधु भाई और बन्धु।
साधु मिलावे राम से काटे यम के फन्द ॥ ४ ॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी में भी आध।
तुलसी संगत साध की हरै कोटि अपराध ॥ ५ ॥

दोहा—बैठ कुसंग चाहत कुशल, तुलसी बड़ा अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावण बसो पड़ोस ॥

शब्द १०८

तजोरे मन हरि बिमुखन को संग ॥ टेक ॥
जाके संगत से दुर्मति उपजत है पड़त भजन में भंग ॥ १ ॥

क्यो होत काग कपूर चुगाये श्वान नुहावत गंग ॥ २ ॥
क्या होत पय पान कराये विष नहीं तजत भुजंग ॥ ३ ॥
चन्दन लेपन गर्धव लाये मर्कट भूषण अंग ॥ ४ ॥
सूरदास यह काली कंबरिया चढ़े न दूजो रंग ॥ ५ ॥
तुलसी रसना तो भली जो तू सुमरे राम ॥
नातर काट बगाइये मुख में भलो न चाम ॥ २ ॥

शब्द १०९

हर भजले रसना (जिव्हा) चाम की ॥ टेक ॥
राम भजन बिन कौन काम की आखिर जिव्हा तू है
चाम की बेचूं तो नाँह छदाम की ॥ १ ॥
ना तीर्थ न देव धाम की नित गूंगी गोविन्द नाम की
निन्दक तू है सारे ग्राम की ॥ २ ॥
बहु स्वादन मेवा बदाम की उतर बहुरि लाकलाम की
जैसे घोड़ी बिन लगाम की ॥ ३ ॥
शंभू सखी मैं चेरो श्याम की खता बारहु आठों यामकी
खता बकसो निज गुलाम की ॥ ४ ॥

दोहा—घट में रहे सूझे नहीं करसे गहा न जाय ।
मिला रहे अरु ना मिले तासु कहा बसाय ॥

शब्द ११

एक अनेक व्यापक पूरक जित देखूं तित सोई ॥ टेक ॥

माया विश्व विचित्र विमोहित बिरला बूझत कोई ॥ १ ॥
सब गोविंद हैं सब गोविंद हैं गोविंद बिन नहीं कोई ॥२॥
सूत एक मणि सहस्र जैसे ओत प्रोत प्रभु सोई ॥ ३ ॥
जल तरंग और फेन बुदबुदा जल से भिन्न न होई ॥ ४ ॥
यह प्रपंच पार ब्रह्म की लीला विचरत आन न कोई ॥ ५ ॥
मिथ्या भ्रम और स्वप्न मनोरथ सत्य पदार्थ जाना ॥ ६ ॥
सुकृत मनसा गुरु उपदेशी जागत ही मन माना ॥ ७ ॥
कहत नामदेव हरि की रचना देखो हृदय विचारी ॥ ८ ॥
घट २ अन्तर सर्व निरन्तर केवल एक मुरारी ॥ ९ ॥

शब्द १११

दोहा–मोहिनी मूरत श्याम की, हृदय रहीसमाय।
लाली मेंदी पात ज्यों, देख लखी न जाय ॥
दलाली लालन की म्हारे सतगुरु दी है बताय ॥ टेक ॥

लाल पड़ा मैदान में कीच रहा लपटाय।
निगुरे निगुरे लखगये सुगुरें लिया उठाय ॥ १ ॥

सब के पल्ले लाल है सब ही साहूकार।
गांठ खोल परखा नहीं रे इस विध आगई हार ॥ २ ॥

इधर से अंधा आवता उधर से अंधा जाय।
अंधे से अंधा मिला रस्ता कौन बताय ॥ ३ ॥

लाली लाली सभी कहें लाली लखी न कोय ।
लालो लखी कबीर ने मुक्ति पाई सोय ॥ ४ ॥

शब्द ११२

दोहा-कबीरा सुन्दरी यों कहे, सुनियो कन्थ सुजान ।
बेग मिलो तुम आय के, नातर तजूं प्राण ॥

पिया बिन सूनो छै म्हारो देश ॥ टेक ॥
ऐसा है कोई पीय से मिलावे तन मन धन करूं पेश ।१।
थारे कारण बन बन डोलूं कर जोगिन का भेष ।।२।
प्रीतम प्यारे दरश दिखाजा तुम बिन बहुत क्लेश ॥ ३ ॥
अवधि बदी थी अजहुं न आये रूपा हो गये केश ॥४॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर तज दियो नगर नरेश ॥५॥

दोहा—निश्चन्त होकर हरि भजे, मन में राखे साँच ।
इन पांचन को बस करे, ताहु न आवे आंच ॥

शब्द ११३

दोहा—भलो भई जो गुरु मिले, नातर होती हान ।
दीपक ज्योति पतंग ज्यों, परता आय निदान ॥

वा घर की सुध कोन बतावे जा घरसे जीवआया डोम् । टेक।
ब्रह्मा विष्णु महेष नहीं थे किसने जीव बनाया डोम् ॥१॥
पानी पवन को दही जमाया अग्नि को जामन दीनो डोम् २
चन्द सूरज दो बने अहीरा मथ के माखन काढ़ा डोम् ॥३॥

रे मनसा माया के लोभी तुझे बार बार समझाया ओम् ।४।
कहत कबीर सुनो भाई साधो वा घर गुरुने लखाया ओम् ५

शब्द ११४

दोहा–पपीहा प्रण कबहुं न तजे, तजे तो तन थे काज ।
तन छूटे तो कुछ नहीं, प्रण छुटे तो लाज ॥

आज जो मैं हरि हुँ न शस्त्र गहाऊं ।
तो लाजूं गंगा जननी को सांतनु सुत न कहाऊं ॥टेक॥
स्यन्दन खंड सारथी खंडूं कपीध्वज सहित गिराऊं ॥१॥
पांडू दल सन्मुख व्हैधाऊं सरिता रुधिर बहाऊं ॥२॥
इतनो न करूं शपथ मोहे हर की छत्री गति नहीं पाऊं ३
सूर श्याम रण भूमी विजय बिन जीवित न पीठ दिखाऊं ४

शब्द ११५

दोहा–भूले थे संसार में, माया के संग आय ।
सतगुरु राह बताइयां, फिर मिलेंगे आय ॥

माया हो रंग बादली जामें चन्दा हो दरशे नांह ॥ टेक ॥
काया में माया बसे ज्यों पत्थर में आग ।
जो तेरी इच्छा हरि मिलनकी चकमक होकर लाग ॥माया१॥
चोर चुगाई तुंबरी जल में डूबे नांह ।
वो डोबे वह ऊभरे करनी छानी नांह ॥ माया २ ॥
काम क्रोध के बने बदरवा गर्ज रहा अहंकार ।
आशा तृष्णा बिबे बिजली भीज रहा संसार ॥ ३ ॥

ज्ञान पवन जब से चली सब बादल दिये उड़ाय।
कहत कबीर सुनो भाई साधो चन्दा हो दर्शे आय ॥४॥

शब्द ११६

दोहा-श्वासों की कर सुमरनी, अजपा कर जाप।
ब्रह्म तत्व का ध्यान धर, सोऽहं आप ही आप ॥

अजपा जाप जपो भाई साधो श्वासों की करलो माला,
मोरे रामा ॥ टेक ॥

हाथ सुमरनी बगल कतरनी यह क्या रचदियो चाला।
लोगोंके भावेंभगती कमावे साहेब के मुख काला। मोरेरामा१॥
जब लग दरशे ना सच्चा साईं होवे ना घट उजियाला।
बिन सतगुरु ताली नहीं लागे खुले न भ्रम को ताला २॥
मन का मनिया फेर प्राणी क्यों हो रहा मतवाला।
गठड़ी खोल लाल नहीं परखा इस विध आया दिवाला ३॥
साध सन्त की सेवा कीजे सन्तों का देश निराला।
कहत कबीर सुनो भाई साधो मोरे रामा ४॥

शब्द ११७

दोहा—पपीहा प्रण कबहुं न तजे तजे तो तन वे काज।
तन छुटे तो कुछ नहीं प्रण छुटे तो लाज ॥

अजि ऐजी साधो सहज समाधी भली।
गुरु प्रताप भयो जा दिन से सुत अनन्त चली ॥ टेक ॥

आँखन मूंद कानन रुंधूं काया कष्ट न धारूं ।
खुले नयन मैं हंस हंस कर देखूं सुन्दर रूप निहारूं ।१।
कहूँ सो नाम सुनूं सो सुमरण खाऊं पिऊं सो पूजा ।
गृह उद्यान एक सम जानो भाव मिटाया दूजा ॥ २ ॥
जहां जहाँ जाऊं सो परिकरमा जो कुछ करूं सो सेवा ।
जब सोऊं तो करूं दण्डवत् पूजूं और न देवा ॥ ३ ॥
कह कबीर यह रहनमन रहनी सो प्रगट कर गाई ।
सुख दुःख से परे प्रेम सुख ताही में रह्यो समाई ॥ ४ ॥

शब्द ११८

तनक हरि चितवो मेरी ओर ॥ टेक ॥
खड़ी खड़ी मैं अर्ज करत हूं अर्ज करत भयो भोर ॥ १ ॥
तुम से हम को नाहें मिलेंगे हमसी लाख करोर ॥२॥
बन माहीं व्याकुल भई डोलूं ढूंढ़ फिरो चहुँ ओर ॥३॥
मीरां के प्रभु कब जो मिलोगे सुन्दर प्रीतम मोर ॥ ४ ॥

शब्द ११९

चल गगन मण्डल के बीच जहां तेरा पिया सजनी ॥टेक॥
वहां एक आवे एक जाय वाके संग क्यों न चली ॥ १ ॥
जहां झिलमिल झिलमिल होये खिल रही चम्पा की कली । २॥
तुम चढ़ो छमाछम जाय पिया की सुखमन सेज बिछी ॥ ३ ॥
मिल एक रूप होजाय दुई तो तुरत मिटी । ४ ॥
यों कहने नाथ गुलाब मुकत की यही है गली । ५ ॥
गुण गावे भवानीनाथ पिया से जाकर मिली । ६ ॥

शब्द १२०

जिस को तू नर तन मानत यह आप रूप भगवान है ॥ टेक ॥
अहंकार ने जब से घेरा कहन लगा मेरा और तेरा ।
भूल गया निजरूप अनेरा तू सर्वज्ञ सुजान है ॥ १ ॥
मैं हूं देह देह है मेरी केवल यही भूल है तेरी ।
पांच तत्व की यह तो ढेरी ज्ञान क्यों भया अज्ञान है ॥२॥
बुरी भली करनी जब करे है बन्धन में तभी तो पड़े है ।
निष्क्रिय को नहीं कुछ डर है तोहे कर्म की आन है । ३॥
सत चित आनन्द भाव संभारो पांच कोश ते होजा न्यारो ।
नाम रूप कुछ नांह निहारो यही तो निर्मल ज्ञान है । ४ ॥

शब्द १२१

चले गये दिल के दामन चीर ॥ टेक ॥
जब सुध आवे तुमरे दरश को उठें कलेजे पीर ॥१॥
नट वर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥ २ ॥
वृन्दावन वंशीवट त्यागो निर्मल जमना नीर ॥ ३ ॥
आप ही जाय द्वारका छाई खारी नद के तीर ॥ ४ ॥
सब गोपियन का नेह बिसारो ऐसे भये बेपीर ॥ ५ ॥
सूरदास ललिता उठ बोली आखिर जात अहीर ॥ ६ ॥

शब्द १२२

दोहा—राजा राना राव रंक, बड़ा जो सुमरे राम ।
कहे कबीर सब में बड़ा, जो सुमरे निष्काम ॥

तू सुमरण करले मेरे मना तेरी बीती जात उमर हरि नाम बिना
पंछी पंख बिन हस्ती दन्त बिन नारी पुरुष पुरुष बिना।
जैसे पंडित वेद विहीना तैसे प्राणी हरि नाम बिना ॥ १ ॥
देह नयन बिन रैन चन्द्र बिन धरणी मेघ मेघ बिना।
जैसे पुत्र पिता बिन हीना तैसे प्राणी हरि नाम बिना ॥ २ ॥
कूप नीर बिन धनुष वीर बिन मंदिर दीप दीप बिना।
वृथा हिये ज्यों ज्ञान विहीना तैसे प्राणी हरिनाम बिना। ३ ॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो त्यागो पाप तुम सर्व जना।
कहें नानक स्याह सुनो भगवन्ताया जग में नही कोई अपना ४

दोहा—जो उगे सो आथवे, फूले सो कुमलाय।
जो चिनिये सो ढै पड़े, जामें सो मर जाय ॥

शब्द १२३

चरखा हालन लागा मारा तैने कैसी खराद उतारा ॥ टेक ॥
कारीगर जहां घड़ने बैठा वहाँ घोर अंधियारा।
वे औजार साल सब कोने मंजा ठीक समारा ॥ १ ॥
नौ दस मास में घड़ कर देता ना कुछ लेत विचारा।
यहत्तर जिसमें छेकी कोठरी बीच रखा गलियारा ॥ २ ॥
ठोक ठाक तियार किया जब पृथ्वी बीच उतारा।
चरखे वाली के मन भाया सब को लागा प्यारा ॥ ३ ॥
अन्त समय चरखे की आई आया हुकम करारा।

माधोदास कहत कर जोरी होगया न्यारा न्यारा ॥ ४ ॥

दोहा–एक शब्द गुरु देव का, जाका अनन्त विचार ।
पंडित और मुनि जन थके, वेद न पाया पार ॥

शब्द १२४

सुनो भाई साधो अक्षर पद का विचार ॥ टेक ॥
नित्य शुद्ध शिव रूप निरंजन निर्विकल्प निश्चय भवभंजन ।
अजर अमर अज निर्गुण निर्मल निर्विशेष निराधार ॥ १ ॥
विभु अनन्त अद्वैत अविनाशी पुरुषोत्तम स्वतन्त्र सुखराशी ।
स्वयं प्रकाश असंग अनादि निष्क्रिय और निराकार ॥ २ ॥
पूर्ण ब्रह्म अचिन्त्य अनूपा अप्रमेय अव्यक्त अनूपा ।
निर्विकार निरवयव सनातन अगम अखण्ड अपार ॥ ३ ॥

दोहा–कबीरा करनी अपनी, कबहुं न निष्फल जाय ।
सात समुद्र आड़े पड़ै, मिले अगाऊ आय ॥

शब्द १२५

करले मन मेरा जो कुछ करना होय ॥ टेक ॥
काल करे सो आज कर जो कुछ करना होय ।
अवसर चूके मौसर नाहीं पीछे झुरना होय ॥ १ ॥
क्या तू फिरे मग्न मन अपने जंगल हिरना होय ।
भँवर फंसा है चौकड़ी सारी भूला ही भरना होय ॥ २ ॥
जोबन जोम ओस का मोती एक दिन ढलना होय ।

अपनी चलती बुरा न करिये सब दिन डरना होय ॥ ३ ॥
मौत निमानी खड़ी शीश पर एक दिन मरना होय ।
बांध रहा वर्षों के सामे पल की खबर नहीं तोय ॥ ४ ॥
जो तुझ को भव धार सिन्धु से पार उतरना होय ।
करले ना मन नाव नाम की सतगुरु सरना होय ॥ ५ ॥

शब्द १२६

सब तज भज हरि नाम पियारे ॥ टेक ॥

दीन दयालु कृपालु दयानिधि भक्तन के रखवारे ॥ १ ॥
पापी पतित गीध गनकासे कोटन जिन बिस्तारे ॥ २ ॥
जहां जहां भीड़ पड़ी भगतन पर तुरत हि आप पधारे ॥३॥
रावण कुम्भकरण से योधा महा युद्ध कर मारे ॥ ४ ॥

शब्द १२७

सुरता हे म्हारी धोबनिया म्हारा दाग जिगर का धोय ।
तनकर कूंडी मति मसाला या ही में खूब करो ।
लोभ लकरिया ठोक जरा भो कुन्दी तो खूब करो ॥ १ ॥
समता नीर ज्ञान का साबुन सत का मावा दो ।
शील शिला पर दे फटकारो या विधि साफ करो ॥ २ ॥
चिवंच तान कर तह बनालो गुलभिट मत राखो ।
जन्म जन्म के दाग लगे हैं अब के तो डालो बाने धोय ॥ ३ ॥

शब्द १२८

पालिक कुल आलम के हो, तुम सच्चे श्रीभगवान ॥ टेक ॥
सूरज चांद पवन और पानी, धरती बीच असमान ।
सब में जलवा तेरा ही देखो, कुदरत पर कुरबान ॥ १ ॥
भारत में अर्जुन के कारण, आप बने रथवान ।
उसने अपने कुल को देखा, छुट गये तीर कमान ॥ २ ॥
ना कोई मारे ना कोई मरता, तेरा हो अज्ञान ।
आतम एक अचल अविनाशी, यह गीता को ज्ञान ॥ ३ ॥
मुझ आजिज पर कृपा कीजो, बन्दा अपना जान ।
मीराँ साधो शरण तुम्हारी, लगा चरण से ध्यान ॥ ४ ॥

भजन १२९

भोर भयो पक्षी गण बोले, उठो अब हरिगुण गाओरे ॥ १ ॥
लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बार बार हर्षाओरे ।
प्रभु की दया सुमिर निज मन में, सरल स्वभाव उपजाओरे ॥२॥
हो कृतज्ञ प्रेम में उनके, नैनन नीर बहाओरे ॥ ४ ॥
ब्रह्म रूप सागर में मन को, बारम्बार डुबाओरे ॥ ५ ॥
निर्मल शीतल लहरें लेले, आतम ताप बुझाओरे ॥ ६ ।

भजन १३०

नाथ कैसे छोड़ बैठे क्या मेरी तक़सीर है ।
जो बैठूंगी प्राण आपने ऐसी मुझ पै भीड़ है ।

ऐसी थी मैं प्राण प्यारी कैद रावणके पड़ी।
राक्षसी डरपा रही हैं हाथ में शमशीर है॥
छुट गई संग की सहेली छुटा सब परिवार है।
छुटगई चरणों की भक्ति खोट गई तकदीर है॥
रात दिन तड़पूं तुम्हारे दरश बिन हे पती
तुमरे आये बिन हमारो कौन बँधावे धीर है।
मुझको सताते हैं निशाचर अब मेरी सुध लीजिये।
दास तुलसी शरण तुमरी जन को मेटो पीर है।।

शब्द १३१

मन पछते है अवसर बीते॥ टेक॥
दुर्लभ देह हाय हरि भज कर्म बचन और हीते।
सहस बाहु दश बदन आदि नृप बचे न काल बलीते॥ २॥
हम हम कर धन धाम संवारे, अंत चले उठ रीते॥ ३॥
सुत बनतादि जान स्वार्थरत, ना कर नेह इन्हींते॥ ४॥
अन्तहु तोहि तजेंगे पामर, तू ना तजे अब ही ते॥ ५ ५॥
अब नाथहिं अनुराग जाग जड़ त्यागहुं दुराशा जीते॥ ६॥
बुझे न काम अग्नि तुलसी कबहुँ बहु विषय भोगऔर घीते।७
मन

शब्द १३२

तारेंगे तहकीक सत्गुर तारगे तहकीक॥ टेक॥

घट हीमें गंगा घट ही में जमना, घट ही में जगदीश ॥१॥
तुम्हरे ज्ञाना तुम्हरे ध्याना, तुम्हरे तारन परतीत ॥२॥
मनकर धीरा बांधले बीरे, छोड़दे पिछलों की रीति ॥ ३ ॥
दास गरीब कबीर का चेला, टारे यम की रसीत ॥४॥

शब्द १३३

मना तैंने राम न जाना रे ।
जैसे मोती ओस कारे, तैसे यह संसार।
देखत ही को झिलमिलारे, जात न लागे बार ॥ १ ॥
सोने का गढ़ लंक बनाया, सोने का दरबार ।
रत्ती सोना ना मिलारे, रावण मरती बार ॥ २॥
दिन गंवाया खेल में रे, रैन गंवाई सोय ।
सूरदास भजो भगवन्ता, होनी होय सो होय ॥ ३॥

शब्द १३४

अरी ऐरी उदा लागी का नाम न ले ॥ टेक ॥
जल से प्रीति करी मछली ने तड़फ तड़फ जिया दे ॥ १ ॥
नादों की प्रीत लगी हिरनों से, सन्मुख सेल सहें। २
दीपक से प्रीति लगी है पतंग की, बार फेर जिया दे।
मीरां की प्रीति लगी है सन्तों से गुरु चरणों चित्त दे ।४

शब्द १३५

तुम्हारे बिना बिगरी कौन सुधारे । टेक ।

जी एक दिन बिगरी पिता पुत्र में, बांध खम्ब जूं मारै ।
जन अपने की काज दयानिधि, रूप नर हरि धारै ॥ १ ॥
जी एक दिन बिगरी भ्रात भ्रात में, लात दशानन मारै ।
राज पाय विभीषण फतह के, बाजत लंक नगारे ॥ २ ॥
जी एक दिन बिगरी राज सभा में, द्रोपदि दीन पुकारे ।
ताको अनन्त चीर बढ़ाय, दुष्ट दुशाशन हारे ॥ ३ ॥
एक दिन बिगरो जन नरसी की, समधी जू के द्वारें ।
सब भांति भात भर, कारज जन के सारे ॥४॥
जब जब भीर परी भक्तन पर, तब तब कारज सारे ।
अब की बार कहां पर सोये, विपत विडारन हारे ॥ ५ ।

शब्द १३६

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ? टेक ॥
क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत्य वचन क्योंछोड़ दिया ? ॥१॥
झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ? ॥२॥
कौड़ी को तो खूब संभाला, लाल रत्न क्यों छोड़ दिया ? ॥३॥
जिहि सुमरन ते अति सुख पावे, सो सुमरन क्यों छोड़ दिया ?॥४॥
कालिक इक भगवान भरोसे, तन मन क्यों न छोड़ दिया ?॥५॥

शब्द १३७

जन्म तेरो बातां में बीत गयो, तैंने कबहुँ न नाम कह्यो ॥ टेक
पांच बरस का आला भोला अब तो बीस भयो ।

मकर पचीसो माया कारण, देश विदेश गयो ॥ १ ॥
तीस बरस अब मति उपजी, लोभ बढ़ै नित नयो।
माया जोड़ी लाख करोड़, अजहूँ न तृप्त भयो ॥ २ ॥
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, जप तप कंठ रह्यो।
साधु की संगत कबहूं न कीनी, बिरथा जन्म गयो ॥ ३ ॥
यह संसार मतलब का लोभी, झूठा ठाठ रच्यो।
कहत कबीर समझ मन मूरख, तू क्यों भूल गयो ॥ ४ ॥

दोहा–चोरी हिंसा अरु व्यभिचार, काया के त्रय दोष विचार।
निंदा अरु कटुवाद असत्य, वाणी के यह दूषण सत्य ॥
तृष्णा द्वेष बुद्धि अरु क्रोध, त्रिविध दोष मनमें तू शोध।
इहि प्रकार नव दूषण त्याग, कर सत्संग खुलेंगे भाग ॥

दोहा–जिसका कोई न होय हृदय से उसे लगावे।
प्राणी मात्र के लिये प्रेम की ज्योति जगावे ॥
सब में विभु को व्याप्त जान सबको अपनावे।
है बस ऐसा वही भक्त की पदवी पावे ॥

शब्द १३८

मुरलिया ने कियो है कठिन तप भारी।
मुरलिया याही ते हरि ने मुख धारी ॥
जन्मत ही ऐसी मत गाढ़ो बन में रहो एक पग ठाढ़ी।
वर्षा शीत उष्णता बाढी सो सही तन पर सारी ॥
मुरली निज तप के फल लीने ब्रह्मा रुद्र इन्द्र बश कीने।

चेतन थे सो जड़ कर दीने अधरन चढ़ी मुरारी ॥
एक मन्त्र विधि हरि से पाव ताते इतनी सृष्टि उपाव।
हरि याकूं नित मन्त्र सुनावे अचरज भयो कहारी ॥
हरि वृजमें नित वैन बजावें तीनलोक धुनिसुनि सुख पावे।
झब्बीलाल मनावे वृज को वास मिले बनवारी ॥

शब्द १३९

सुना है हमने निर्बल के बल राम ॥ टेक ॥
जब तक गज बल अपनो कीनो, सरो ना एक हु काम।
जब गज ने हरि नाम सम्हारो, आगये आधे नाम ॥१॥
दीन होय जब द्रौपदी टेरी, बसन रूप धरा श्याम ॥२॥
बहुत ही साख सुनी सन्तन की, अड़े संवारे हैं काम।
नरसी भक्त की हुन्डी पेली, दिये रोकड़ा दाम ॥३॥
जप बल तप बल और भुजा बल, चौथे बल हैं दाम।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हारे के हरि नाम ॥४॥

शब्द १४०

सिया रघुवीर भरोसो ऐसो। वारि न बोरि सकै।
प्रहलादहि पावक नाहिं जरोसो। ऐसो॰ ॥१॥
हिरणा कुश बहु भांति सतायो हठ कर बैर करो सो।
मारयो चहै दास नर हरि को, आपै दुष्ट मरोसो ॥२॥
मीरां के मारन के कारण पठयो ज़हर खरोसो।
राम नाम अमृत भयो ताको, हंस हंस पान करो सो ॥३॥

द्रोपद सुता को चीर दुशासन, मध्य सभा पकरोसो।
ऐंचत ऐंचत भुजबल हारे, नेक न अंग उघरो सो ॥४॥
भारत में भंवरी के अण्डा, कोटिन दल बिखरो सो।
राम नाम जब पंछिन टेरयो, घंटा टूटि परोसो ॥ ५ ॥
आरयो लंक अजनी नन्दन, देखत पुर सगरासो।
ताके मध्य विभीषण को गृह, राम कृपा उबरोसो ॥६॥
रावण सभा कठिन प्रण अंगद, हठकर हरि सुमरोसो।
मेघनाथ सम कोटिन योधा, जाने पग न टरयोसो ॥७॥
तुलसीदास विश्वास रामपद, जो नर नारी नरोसो।
और प्रभाव कहांलग वरणों, जेहि यमराज डरोसो ॥८॥

शब्द १४१

देखोरी ये कैसो बालक रानी यशुमति जायो है। टेक
सुन्दर वरण कमल दल लोचन देखत चन्द्र लजायो है।
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रकट नन्द घर आयो है ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे केशर तिलक लगायो है।
कानन कुण्डल गल बिच माला कोटि भानु छवि छायो है ॥
शंख चक्र गदा पद्म विराजे चौभुज रूप बनायो है।
परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलायो है ॥
मच्छ कच्छ वाराह अरु वामन राम रूप दर्शायो है।
खम्भफार प्रकटे नर हरि वपु जन प्रहलाद छुड़ायो है ॥
परशुराम बुद्ध निहकलंक होय भुवि का भार मिटायो है।

कालो मर्दन कंस निकन्दन गोपीनाथ कहायो है।।
मधु सूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्त वछल पद पाया है।
शिवसनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख गायो है॥
सो परब्रह्म प्रकट होय व्रज में लूट लूट दधि खायो है।
परमानन्द कृष्ण मन मोहन चरण कमल चित्त लायो है॥

दोहा–सब से भली मधुकरी, भांत भांत का नाज।
दाता काहू का नहीं, बिना बिलायत राज॥
राजा राना राव रङ्क, बड़ा जो सुमरे नाम।
कहे कबीर बड़पन नड़ा, जो सुमरे निष्काम॥

शब्द १४२

दोहा–माया तो ठगनी भई, ठग लीना सब देश।
जिस ठग ने माया ठगी, उस ठग को आदेश॥
माया महा ठगनी हम जानी।
त्रैगुण फांस लिये कर डोले, बोले मधुरी बानी। टेक
केशव के कमला होय बैठो, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
पण्डा के मूरत होय बैठो, तीरथ हूँ में पानी ॥१॥
जोगी के जोगन होय बैठी, राजा के घर रानी।
काहू के हीरा होय बैठी, काहू के कौड़ी कानी ॥२॥
भक्त के भक्तन होय बैठी, शिव के भवन भवानी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी ॥३॥

भगवद्भक्ति आश्रम (रामपुरा)

दिल्ली के निकट हरियाना और राजपूताना की सरहद पर यह आश्रम आबादी से दूर जंगल में स्थापित है। आश्रम का मुख्योद्देश्य मनुष्य मात्र में भगवान की भक्ती का प्रचार करना है। इस आश्रम में प्राचीन ऋषि मुनियों की प्रणाली के अनुसार शिक्षा भी दी जाती है जो ब्रह्मचारी आश्रम में रहते हैं वह नौकरों की सहायता के बिना अपना भोजनादि स्वयम् पाक करते हैं। अपने आश्रम को वृक्षों को लगाते हैं और जोहड़ (तालाब) खोदने और आश्रम की सड़कें इत्यादि बनाने के लिये फावड़े से काम करना इनका नित्य का कर्तव्य है। इस प्रकार अपनी दिनचर्या करके श्री गुरू सेवा सुश्रुषा द्वारा गुरुके चरणोंमें बैठ कर विद्याध्ययन करते हैं कुछ बालक ग्रामों से नित्य प्रति पढ़ने के लिये आते हैं। इन को आश्रम हिन्दी और संस्कृत में निःशुल्क शिक्षा देता है। हिन्दी की पुस्तकें भी बालकों को आश्रम की तरफ से दी जाती हैं प्रत्येक जाति के बालक अछुत पर्यन्त शिक्षा पाते हैं आश्रम से लोगों को दवायें भी मुफ्त दी जाती है और आवश्यकता पड़ने पर आश्रम वासी ग्रामों में जाकर भी रोगियों को देख आते हैं। यह आश्रम नियमानुसार एक कमेटी की संरक्षकतामें है जिन के सभ्य यह हैं।

१-राव बहादुर धर्म भूषण लेफटेनेन्ट राव बलवीरसिंह आनरेरी मजिस्ट ट जागीरदार रेवाड़ी

२-ला० मथुराप्रसाद दिल्ली
३-ला० रामजीदास अग्रवाल भटिन्डा
४-ला० कृष्णलाल जीन्द
५-ला० नन्दकिशोर दादरी रियासत जीन्द
६-प० दिलीप वानप्रस्थी
७-पं० मुरारीलाल गौड़ जीन्द

आश्रम बी० बी० एन्ड० सी० आई० आर० लाइन के रेवाड़ी स्टेशन से २ मील की दूरी पर रामपुरा ग्राम के जंगल में है।

इस पुस्तक के अतिरिक्त आश्रम से निम्नलिखित और पुस्तकें बिना मूल्य केवल डाक महसूल भेजने से भेजी जाती हैं 'सार संग्रह' 'माण्डूक्योपनिषद्' 'हिन्दी भाषान्तर'।

यदि कोई सज्जन इन पुस्तकों को छपवा कर लोगों में धर्मार्थ बांटना चाहे तो आश्रम से आज्ञा प्राप्त करने पर छपवा भी सकता है।

रामजीदास अग्रवाल मंत्री, भटिन्डा

नोट—आश्रम के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार करने का मुख्य पता यह है।

म० दिलीप वानप्रस्थी मैनेजर—भगवद्भक्ति आश्रम
रामपुरा पो० रेवाड़ी
जि० गुड़गांव (पंजाब)

लाइन के
ग्राम के

खित और
ने जा-ी
।
लोगों में
करने पर

भटिन्डा
करने का

ग्रम

ज्ञाव)

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से
अनन्तराम, साठवे और के० एन० गोएनका के
"सद्धर्मप्रचारक यन्त्रालय" देहली में मुद्रित।